तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स
अंक :१७ वर्ष :१८ ५-१४ सितम्बर १९

दीवाना

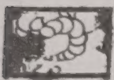


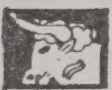


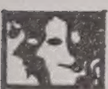
काश मैं राजा न होता ! एक साधारण व्यक्ति होता···कहीं भी आने-जाने को आजाद होता ।
जंगल, पहाड़ों में हिरण की तरह चौकड़ियां भरता···।
पक्षियों का कलरव सुनता, फूलों की सुगन्ध सूंघता···जंगल-जंगल विचरता···।
और जंगल में बकरियां चराती एक अति सुंदर लड़की पत्थर पर बैठी रोती मिलती, मैं उससे कारण पूछता···वह अपनी सौतेली मां के अत्याचारों का वर्णन करती । मैं उसे ढाढस बंधाता—
पहली नजर में ही हम एक-दूसरे के हो जाते । दिल दे बैठते । और हम दोनों प्रेम की हसीन वादियों में खो जाते···उम्र भर साथ देने का वादा करते ।
उन्मुक्त हवा की तरह नाचते और गाते-फिरते···
ऐसा भी होता···
ऊई···मेरे पैर में कांटा चुभ गया ।
घबराओ मत उस पत्थर पर बैठो । मैं निकालता हूं कांटा···
यह क्या हो रहा है ?
सेनापति जी मेरा कोई दोष नहीं है । मैं राजा जी को सन्देश देने आया तो इन्होंने मुझे कुर्सी पर बैठने का आदेश दिया और मेरा पैर पकड़ जूते के तलवों में कुछ ढूंढ़ने लगे ।
महाराज, ऐसी हरकतों से शाही-शान में बट्टा लगता है । बलवा हो सकता है । लोग सोचेंगे राजा का दिमाग चल गया है । मैं पूछ सकता हूं कि यह हो क्या रहा था ?
मैं चैकिंग कर रहा था कि हमारे सिपाहियों के जूतों के तलवों में घटिया क्वालिटी का चमड़ा तो नहीं लगा है ?

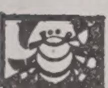
आपका भविष्य

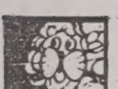
पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञभूषण पं.हंसराज शर्मा

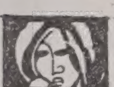

मेष : व्यर्थ खर्च एवं चिन्ता, यात्रा पर जायें, अच्छे लोगों से मेल मिलाप, आनंद एवं सफलता मिलेगी, हालात भी सुधरेंगे, परिश्रम से काम बनेंगे, व्यय यथार्थ पर लाभ कुछ देर से मिलेगा।


वृष : दौड़ धूप अधिक एवं सफलता भी मिलेगी, स्वास्थ्य नरम चलेगा, मनोरंजन पर व्यय, यात्रा हो सकती है, कारोबार पहले से अच्छा, शत्रु की हार फिर भी सावधानी से रहें, वाद विवाद में न फंसे।

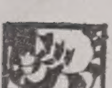

मिथुन : कोई विशेष या रुका हुआ काम बन जाएगा, कारोबार से लाभ होगा, सज्जनों के परामर्श से लाभ होगा, बेचैनी बिना कारण ही रहेगी, कारोबार ठीक चलेगा।

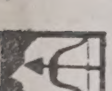

कर्क : परिश्रम सफल एवं शुभफल प्राप्त होंगे। बड़े लोगों से मेल मिलाप रहेगा, लाभ खर्च समान, मेहनत का फल अवश्य मिलेगा, किस्मत साथ देगी, विशेष काम बन जाएगा।

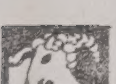

सिंह : स्थायी काम धन्धों से लाभ होगा, परिश्रम का फल मिलेगा, घरेलू योजनाओं का व्यय अधिक, कारोबार की हालत सुधरेगी, लाभ में वृद्धि राजकीय काम बन जायेंगे।

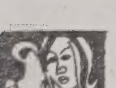

कन्या : सज्जनों के परामर्श से लाभ होगा, काम बन जायेंगे, परन्तु पैसे की कमी रहेगी, लाभ अच्छा किन्तु खर्च भी साथ-साथ रहेगा, कठोर परिश्रम का सामना, सफलता भी मिलेगी।

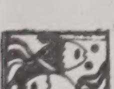

तुला : सुस्ती या थकावट का प्रभाव रहेगा, घरेलू कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, आय में वृद्धि पर खर्च भी काफी करना पड़ेगा, विरोधियों से चिन्ता, कोई खास खबर आएगी।


वृश्चिक : यात्रा में सुख व मान, नातेदारों से मेल जोल, विशेष व्यय होगा, लाभ खर्च समान, धार्मिक कामों में रुचि, रुका पैसा मिलने की उम्मीद है, मेहनत काफी रहेगी, यात्रा सफल।


धनु : घरेलू हालात सुधरेंगे, धन व्यय होकर लाभ भी अच्छा होगा, किसी विशेष सूचना की उम्मीद है, दौड़ धूप अधिक पर लाभ एवं सफलता कम, शत्रु हार मानेंगे, नातेदारों से मन मुटाव रहेगा।


मकर : दोस्तों से मेल जोल एवं मदद मिलेगी, घरेलू हालात से परेशानी रहेगी, काम काज का बोझ बढ़ेगा, मेहनत से बिगड़े काम बनेंगे, घरेलू कामों में व्यस्तता रहेगी।


कुम्भ : काम काज सामान्य चलेगा, यात्रा में कष्ट या परेशानी, लाभ देर से मिलेगा, यात्रा सफल मगर करें सावधानी से, विशेष परिश्रम का सामना, कारोबार सुधरेगा।


मीन : परिश्रम अधिक एवं सफलता आशा से कम मिलेगी, मिश्रित फल प्राप्त होंगे, हालात ठीक चलेंगे, आय में वृद्धि, नया काम न करें, स्थाई काम धन्धा ठीक चलेगा, लाभ अच्छा पर देर से मिलेगा।

आपके पत्र

दीवाना का अंक 14 मिला मुखपृष्ठ देखते ही हंसी का फव्वारा छुट गया। यदि आप मुख पृष्ठ चिकने कागज पर छापें तो बेहद अच्छा हो। इस अंक में लल्लू, राजाजी परोपकारी, बन्द करो बकवास, मदहोश, लव स्टोरी, नामी चोर, सवाल यह है ?, कुत्ता पाल कर देखिये, सिलबिल, पिलपिल, फैण्टम, मिनी तामशा सभी पसन्द आये।

—सुरेश रोहरा, कोरबा

दीवाना का नया अंक काफी इन्तजार के बाद मिला, लेकिन हर बार की तरह यह अंक भी हास्य और मनोरंजन से परिपूर्ण लगा। विशेषकर 'लल्लू' और 'राजाजी', सिलबिल, पिलपिल, परोपकारी, नामी चोर, शौकीन सिंह (लेखक त्रिकान्त सिंह), सवाल यह है, फैण्टम अपने-अपने स्थानों पर सही रहे। मोटू-पतलू की कमी वास्तव में अखरती है, लेकिन उनकी कमी बाकी के रोचक स्तम्भ पूर्ण कर देते हैं। दीवाना में प्रस्तुत होने वाला हर फीचर, हर सामग्री इसी प्रकार अपना स्थान बनाये रखे यही हमारी दुआ है—

—एम. एस. गुजराल

दीवाना अंक 14 मिला। पढ़कर मन खुशी से झूम उठा। कितने दिन बाद श्री लल्ला ने अपनी प्रेम कहानी सुनाई, नामी चोर देखकर दिल चाहा कि पकड़कर बिठा लूं और कभी ना छोड़ूं। सवाल यह है में भी रोचक सवाल मिले। लल्लू, राजा जी, परोपकारी और पिलपिल-सिलबिल पहले से ज्यादा स्मार्ट थे। टी. वी. मुरम्मत, गाइड और 'कुत्ता पाल कर देखिये में फायदा ही रहा। कहानी शौकीन सिंह भी बेहद हंसोड़ थी।

सम्पादक जी, अगर आप इसी तरह के अंक देते रहे तो दीवाना हिमालय से भी ऊंचा उठ जायेगा।

—नेद प्रकाश 'अमित' दिल्ली

दीवाना का अंक 13 प्राप्त हुआ। इस बार बहुत दिनों के बाद अच्छा मुखपृष्ठ देखने को मिला। लेकिन अन्दर वैसा मसाला नहीं मिला जैसी आशा थी। विशेषकर 'राजा जी' ने बोर किया। फिर भी 'टी शर्ट', 'एशियाड-82' और 'हमें पता लगता है जब हम आशिक बन गये हैं' पसन्द आया। आशा है आगे से आप कुछ विशेष ध्यान रखेंगे।

—एन. एस. भाटिया, स्टेशन

दीवाना का अंक 13 प्राप्त हुआ। हर बार की तरह इस बार भी आपने कुछ नये फीचर दिये। फिल्मी पैरोडी 'बे-मसाला' तो सचमुच बे मसाला थी। पढ़ने में कुछ खास मजा नहीं आया। सबसे ज्यादा पसन्द आया तो इसका मुख पृष्ठ। 'टी शर्ट', फैशन शो एशियाड-82' और 'आशिक बन गये' बहुत ही पसन्द आये। कृपया इसे सिर्फ बच्चों की ही पत्रिका न बनायें। क्योंकि बच्चों की भी बड़ा होना है।

—नरेन्द्र राजीव, कानपुर

मुख पृष्ठ पर

डाक तार की देख चुके तुम
अक्सर पत्र लेट ही आते
हाल बुरा तब हो जाता है
रिश्तेदार जब घर आ जाते।
ठीक समय पर मिले सूचना
चिप्पी के इस बॉक्स में डालो
सूचना मिलेगी तुमको
मेहमानों को गले लगा लो॥

दीवाना

अंक : १७ वर्ष : १८ १—१४ सितम्बर १९८२

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

खटमल सूरमा

पूरन शर्मा

उन दिनों मैं खटमल नामक जीव से वाकिफ नहीं था और जब तक उससे साक्षात्कार नहीं हुआ, गोया मेरे लिए वह शेर की तरह बना रहा। गांव में जब मेहमान लोग शहर से पहुंचते थे तब वे हमारे साथ यदा-कदा खटमल का जिक्र किया करते थे। पता नहीं उनका उस समय इसका जिक्र करने का उद्देश्य क्या था, पर अब सोचता हूं तो लगता है कि वे इसलिए खटमल की भयानकता दर्शाते थे ताकि हम लोग उनके यहां मेहमान बनकर न चले जायें। अवश्य ही इसीलिए वे हमें खटमल से डराते थे। बचपन से ही मेरा कौतूहल खटमल के प्रति जग गया था। उनके दर्शनों की प्रबल लालसा मेरे हृदय में घर कर गई थी।

कई बार मैं सोचा करता था यह वन्य-जीव (इसकी भयानकता के कारण मैं उसे वन्यजीव ही मानता था) लोग कहते हैं कि सोने वाली चारपाई में पाया जाता है, तो फिर सोते कैसे होंगे। इतना सोचते ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते थे और इसकी भयानकता मेरी आंखों में विकराल रूप ले लेती थी। और उन शूरमाओं के प्रति मैं नतमस्तक हो जाता था जो उनकी उपस्थिति में भी चारपाई में सो लेते थे।

मुझे एक रात सपना आया—मैं खटमल से भिड़ गया हूं और उसने मुझे दबोच लिया है। एक चीख के साथ मेरी नींद टूट गई और पिताजी लपककर मेरे पास आये और बोले—'मुन्नू क्या बात है डर क्यों रहे हो? बोलो क्या बात है?'

मैं डरते हुये बोला—'पिताजी अभी मैं क्या देखता हूं—जैसे एक खटमल से भिड़ गया हूं और उसने मुझे कसकर काट लिया है।'

'खटमल! यहां खटमल कैसे आया।' वे दौड़कर लालटेन ले आये और मेरे बिस्तरों में इस वन्य जीव की खोज करने लगे। पिताजी उसकी खोज इतनी मुस्तैदी से कर रहे थे जैसे वह बिस्तर में रह गया तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जायेगा!

पिताजी हारकर चारपाई से दो कदम दूर खड़े होकर बोले—कुछ नहीं बेटे, डरो नहीं सपने में ऐसा हो गया है। आओ मेरे पास सो जाओ। कई बार इन आने वाले मेहमानों से कहा है वे खटमल के बारे में बात न करें, लेकिन पता नहीं वे क्यों बार-बार इसकी चर्चा करके जाते हैं।

उसके बाद मैं पिताजी के पास ही सोने लगा। अकेला चारपाई पर सोना मेरे लिए मुश्किल हो गया। इस घटना के बाद तो घर का प्रत्येक सदस्य इस जीव से सचेत हो गया। कुछ लोगों ने समझाया भी आप व्यर्थ में डरिये मत—यह जीव मूलतः शहरों में पाया जाता है। गांवों में तो इसका नामो-निशान तक नहीं है। लेकिन हम भीतर तक सहमे हुये थे।

हाई स्कूल पास करके मेरे आगे पढ़ने की बात आई तो मां ने शहर भेजने से मना कर दिया। वह बोली—भला वहां खटमलों में यह कहां रहेगा। इसे कुछ हो गया तो क्या होगा?

पिताजी मुझे पढ़ाना चाहते थे, वे मां को समझाते हुए बोले—तुम भी कैसी बात करती हो मुन्नू की मां। वहां शहरों में भी लाखों लोग बसते हैं। फिर इसे अभी पढ़ना जरूरी भी है।

पिताजी के लाख बार समझाने पर मां मुझे शहर भेजने को तैयार हुई। पर उसी समय पिताजी मुझे एक ओर ले जाकर बोले—सुनो मुन्नू, खटमलों से बचना। सचेत होकर ही उठना, बैठना। डर तो मैं भी रहा हूं। लेकिन तुम्हें पढ़ना भी है।

मुझे शहर जाने का शौक तो था—पर मैं भी अभी तक खटमल से डर रहा था। जैसे-तैसे हिम्मत बटोर कर मैंने मन को कड़ा किया और शहर जाने वाली बस में बैठ गया। बस चलने लगी तो पिताजी बोले—देखो मुन्नू, खटमलों का ध्यान रखना। पिताजी के इस कथन पर मेरे आस-पास बैठे एक-दोआदमी चिंहुक कर खड़े हो गये और अपने कपड़े झाड़ने लगे। तथा मुझे शंकित नजरों से देखने लगे। जैसे खटमलों का जन्मदाता मैं ही हूं।

शहर में आकर मैंने एक कमरा किराये पर ले लिया। कमरा तय करते समय मैंने मकान मालिक से धीरे से पूछा—क्यों साहब, खटमल तो नहीं होंगे।

मकान मालिक ने मुझे प्रश्न सूचक दृष्टि से देखा और बोला—क्यों क्या आप जहां खटमल होंगे वहीं कमरा किराये पर लेंगे?

नहीं, दरअसल, मुझे इनसे डर लगता है।

तो फिर आप निश्चिन्त होकर कमरे में रहिये, हमारे यहां खटमल नहीं हैं। मकान मालिक ने ढाढस दिया।

पहली रात ही मेरे साथ अनहोनी घटते-घटते रह गई। चारपाई में सोया तो अचानक किसी पैने दंश ने मेरी आंखें खोल दीं। मैं चिंहुक कर उठा और लाइट जलाकर देखा तो मेरे बिस्तरे पर पन्द्रह-बीस लाल रंग के जीव मेरा घेराव करके खड़े थे।

मेरी आंखों के आगे खटमल नाचने लगे। और उसकी स्मृति-मात्र से थर-थर कांपने लगा। मैं कई पलों तक इन विचित्र जीवों को अपलक आश्चर्य-जनक निगाहों से घूरता रहा। मुझे कुछ देर बाद विश्वास हो गया, हो न हो यह खटमल ही हैं।

मैं भागकर मकान मालिक के कमरे की ओर दौड़ा और कुंडी खटखटाने लगा। मकान मालिक तो जगा नहीं, मालकिन आई और बोली—कहिये, इस आधी रात में हमारी नींद आपने कैसे खराब की?

बात यह है जी, कमरे की जब बात तय हुई थी—तब मैंने खटमलों के बारे में पूछा तो आपके पति महाशय ने खटमल नहीं होने की गारण्टी दी थी—और स्थिति यह है कि खटमल मेरा घेराव कर खड़े हैं।

मेरी इस बात पर मकान माल-

शेष पृष्ठ ८ पर


हर रंग में उमंग...
कालिंक के संग.
बच्चों के इस खूबसूरत शौक को
ज्यादा उभारिए–उनकी कला ओर कल्पना
को और निखारिए–कालिंक रंगों की
रंगबिरंगी बहार से। कालिंक उत्तम क्वालिटी
के रंग है जो ज्यादा टिकाऊ, ज्यादा चमकीले,
ज्यादा सजीले होते हैं। कागज पर फैलते नहीं,
और सूखते भी जल्दी है।
सुन्दर रंगों की सुन्दर दुनिया
–कालिंक ने सजाई।
आर्ट मास्टर
कलर बाक्स
पोस्टर व
वाटर कलर
COLINK OIL PASTEL
Colink
Colink
Colink
ART MASTER
निर्माता
कालिंक इन्डस्ट्रीज
नई दिल्ली-११००१५

लघु कथा

भाषण बनाम शोर करने का सुख

—रचना गोस्वामी

एक महानगरी में एक कुत्ता था। वह कुत्ता बड़ा उपदेशक था। वह गांव भर के कुत्तों को समझाता था कि जाति बरबाद हो रही है, हमारी कौम नष्ट होती जा रही है, हमारा आचरण बिगड़ता जा रहा है। वह यह भी कहता—'जब तक कुत्तों की जाति व्यर्थ चिल्लाना बंद नहीं करेगी, तब तक कुत्तों का जीवन ऊपर नहीं उठेगा।

लेकिन वास्तव में चिल्लाना तो कुत्तों के स्वभाव का हिस्सा है। यह ऐसी कमजोरी है कि कोई कितना ही समझाये कुत्ते इसमें क्या कर सकते हैं। कुत्ते उसकी बात सुन लेते, थोड़ी बहुत देर सांस रोक कर चुप भी रह जाते, लेकिन उस उपदेशक के चले जाने पर फिर चिल्लाना शुरू कर देते।

वह उपदेशक धीरे-धीरे बड़ा कहलाने लगा, क्योंकि वह अकेला कुत्ता था, जो चिल्लाता नहीं था। बाकी सब कुत्ते चिल्लाते थे। लेकिन बात असल में यह थी कि दिन भर कुत्तों को समझाने में उसे चिल्लाने का पूरा मजा आ जाता था। एक रात कुत्ते उस उपदेशक से बहुत परेशान हो गए और तय किया कि कम से कम एक बार तो हम इसकी बात मान ही लें।

वह अमावस की रात थी। उन्होंने कहा, आज हम कसम खाते हैं कि आज रात नहीं चिल्लायेंगे, चाहे कुछ भी हो जाये। सारे कुत्तों ने कसम खा ली और एक-एक कोने में दुबक कर पड़े रहे। उन्होंने सांस रोक ली, आंखें बन्द कर लीं और बिल्कुल शांति में लीन हो गये।

शांति होते ही उपदेशक निकला कि कोई मिल जाये चिल्लाता हुआ तो समझाऊंगा। लेकिन आज तो रात सन्नाटे में थी। कोई कुत्ता दिखायी नहीं पड़ता था। कहीं कोई आवाज न थी। रात के बारह बज गए, वह घबरा गया। कोई कुत्ता चिल्लाता हुआ दिखाई नहीं पड़ा। जहां भी गया, हर कुत्ता आंखें बन्द किये चुपचाप बैठा नजर आया। आज पहली बार छह घण्टे तक उसे बोलने का मौका नहीं मिला। उसके गले में खरास पैदा होने लगी। उसका मन हुआ कि चिल्लाऊं। वह बड़ा हैरान हुआ कि यह इच्छा तो मुझे कभी नहीं हुई थी, यह कौन शैतान मुझे सता रहा है। चिल्लाने का तो मुझे कभी ख्याल ही नहीं आया था। रात दो बज गये, फिर उसके वश के बाहर हो गया। वह बेचैन हो उठा। आखिर वह एक अन्धेरी गली में गया और उसने चिल्लाना शुरू कर दिया। वह वर्षों से नहीं चिल्लाया था। उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर बाकी कुत्तों ने समझा कि किसी एक ने कसम तोड़ दी, अब हम भी क्यों रुकें। और देखते ही देखते सारा नगर चिल्लाहटों से भर गया। अब वह कुत्ता अन्धेरी गली से बाहर आ गया और कुत्तों को समझाने लगा कि देखो, चुप रहो, इसी चिल्लाने ने हमारी जाति को बरबाद कर दिया। हम इसी से पतित हो रहे हैं। चिल्लाना बन्द करो, मैंने कितना चिल्लाया लेकिन तुम सुनते नहीं हो। फिर उसने भी चिल्लाना शुरू कर दिया।

उस रात उसे एक सचाई का पता चला कि दरअसल चिल्लाने का जो आनंद था उसे उपदेश देने में मिल जाता था, इसीलिए वह अब तक चिल्लाने से बचा हुआ था।

पृष्ठ ६ से आगे

किन हंसी और बोली—जाओ मुन्नूजी सो जाओ, हम उन्हें समझा देंगे कि वे तुम्हें परेशान न करें।

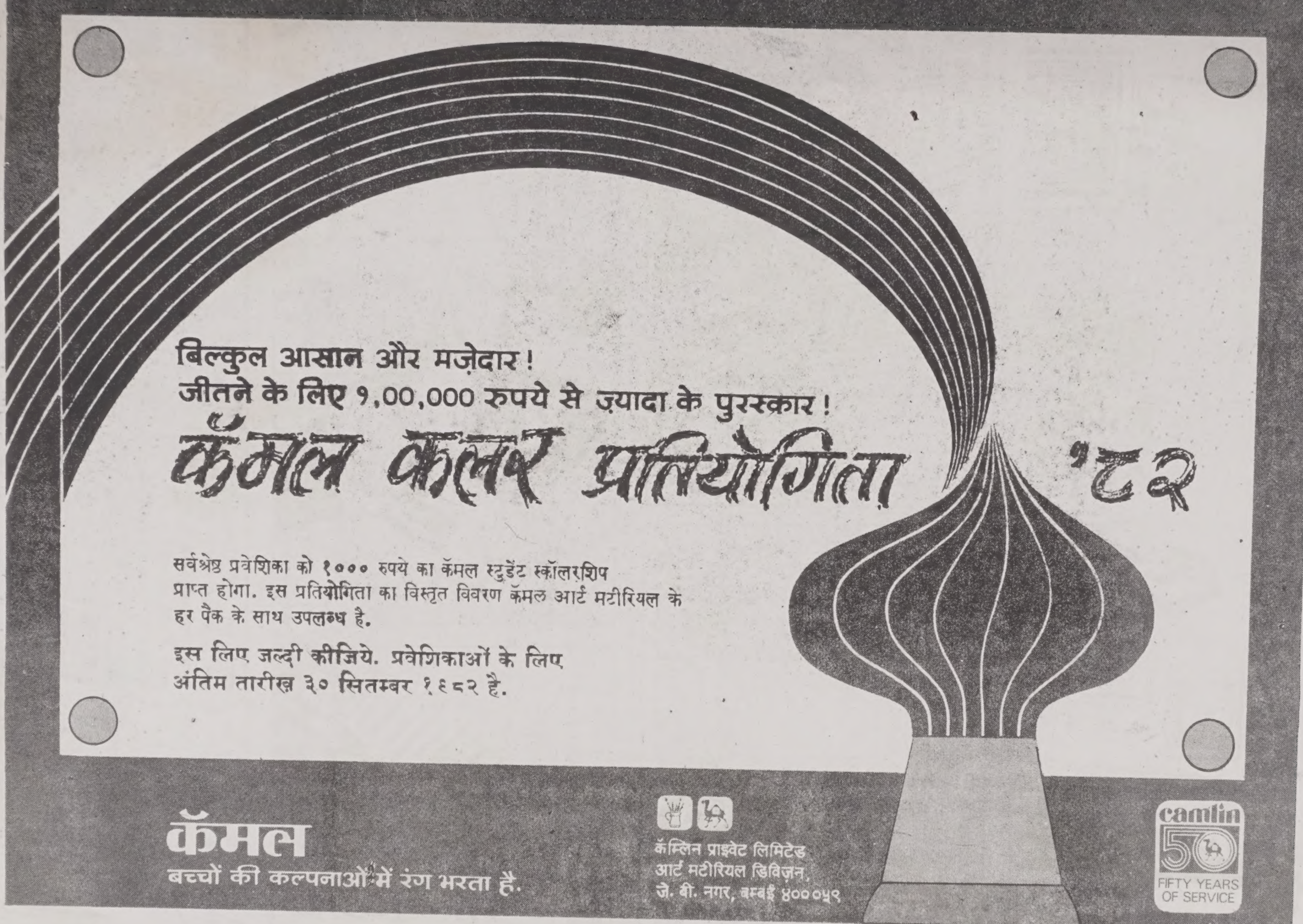
मैंने कहा—आप हंस रही हैं। मेरे साथ सरासर धोखा किया है। क्या आप लोग भी इसी तरह खटमलों से घिरे सो रहे हैं।

नहीं""""आइये, देखिये हम तो अपने बच्चों से घिरे सो रहे हैं। मैंने देखा उनके कमरे में पांच-सात बच्चे बिखरे पड़े थे और उनके बीच में पति-पत्नी आराम फरमा रहे थे। मकान मालकिन फिर बोली—आप तो मुन्नूजी खटमलों से डर गये, हमें देखिये हम इन बड़े-बड़े खटमलों से घिरे भी आराम से सो रहे हैं। घबराइये नहीं। खटमल आपका कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। देखिये जब तक आपके खून चूसने वाले बच्चे पैदा नहीं हो जाते—तब तक खटमलों को ही चूसने दीजिये।

मैं मकान मालकिन का आलाप भली-भांति नहीं समझ पाया और चारपाई को आकर देखा तो पलटन नदारद थी। बिस्तर उठा, पटककर देखा—कहीं भी वे लोग नहीं दिखे। आखिर मैं लाइट जली छोड़कर सो गया और सुबह आराम से उठा लिया।

फिर तो धीरे-धीरे मैं शहरी खटमलों के साथ रहने का अभ्यस्त हो गया और कभी जागता, कभी बैठा-बैठा खटमल मारता, कभी शरीर का अंग-अंग रात देर तक खुजलाता रहता। लोग यह सोचते थे मैं रात में देर तक पढ़ा करता हूं। मैंने यह अनोखा सुख प्राप्त कर लिया था। पिताजी ने पत्र में खटमलों से बचाव की हिदायत लिखी तो मैंने जवाब में लिखा कि मैंने शहर के खटमलों पर विजयश्री प्राप्त कर ली है—तो उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई और वे गांव भर में मेरे साहस का गुणगान करने लगे।

काफी दिनों बाद मैं गांव लौटा तो साबूत पाकर गांव वालों ने मेरा सार्वजनिक अभिनन्दन किया और मुझे खटमल सूरमा की उपाधि से विभूषित किया। मैं इस आत्म-सम्मान से सरोबार था और मां और पिताजी बार-बार मुझे शेखी से देखते थे। पर पिताजी ने मुझे फ़ौज की नौकरी में कभी नहीं जाने दिया—जबकि गांव वालों का दबाव था कि मैं देश की सेवा करूं।



Vision 825/HIN


सिलबिल पिलपिल
गुस्से का दैत्य
भाई जी रात को खटमलों ने बोत तंग किया । मैं हाथ-पैर मारता और करवटें बदलता-बदलता खाट से नीचे आ गिरा । उस वक्त मुझे बोत गुस्सा आया हुआ था । मुझे ऐसा लगा कि रीढ़ की हड्डी और सिर में कहीं अन्दरूनी गुम चोट लगी है । दर्द तो नहीं है लेकिन सारे शरीर में अजीब सी सुरसुरी हो रही है, डाक्टर के पास जाऊं ?
बायोडैक्स मल ले । ठीक हो जाएगा ।
डाक्टर तो चोर होते हैं ! बेकार में एक्सरे, यूरीन टैस्ट और ई. सी. जी. में तीन-चार सौ रुपए झाड़ लेंगे । पैसे कोई पेड़ों पर थोड़े ही उगते हैं ।
लेकिन यह हैल्थ का मामला है । शेक्सपियर ने कहा है कि हैल्थ इज वैल्थ । कहीं अन्दर ज्यादा चोट लगी हो ?
क्यों पैसे डुबोने पर तुला है मूर्ख ।
देखो यह गंजा मेरी सेहत को पैसों पर कुर्बान करना चाहता है ।
मुझे बोत गुस्सा आ रिया है ।
BZZZN!
ऐ की !
गुस्सा चढ़ते ही सिलबिल के शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन होता है ।
ब ब ब ब ब ब
देखते ही देखते सिलबिल का शरीर एक विश नीले रंग के दैत्य में बदल जाता है । सिल ने जो टी शर्ट पहन रखी थी वह बढ़ते शरीर दबाव में फट कर हवा निकले गुब्बारे की त फर्श पर आ गिरती है ।
ऊ वा ग्रम्प ।
जल्दी भाग चलो, यहां से.........
दूसरे कमरे में ।
ब ब ब.....अ ब ला घूं घूं पलात वा
आह ! जान बची तो लाखों पाये । शुक्र है इसका आकार इतना बढ़ गया है कि यह दरवाजे से होकर इस कमरे में नहीं आ सकता । यहां हम सुरक्षित हैं । जरा एक-एक गिलास ठंडा पानी पी लें ।
फिर ठंडे दिमाग से विचार करेंगे कि यह हुआ क्या ? हम दोनों सपना और शहर तो नहीं देख रहे ? इसका क्या करें ? अगर पी० डब्ल्यू० डी० के ठेकेदार होते तो इसे पत्थर तोड़ने पर ही लगा देते ।


ह जो कह रहा था कि रात को खाट से गिर पड़ा था कुछ गड़बड़ उसी से हुई है। रोढ़ और सिर में चोट लगी होगी और इसमें यह खराबी आ गई। बौड़म तो यह है ही। जिस चीज का दूसरों पर एक पैसा असर होता है उसका इस पर दस रुपए के बराबर होता है।
देखो जब तुमसे बहस में इसको गुस्सा आया तो तब यह परिवर्तन एक दम आने लगा। इसका साफ मतलब है कि जैसे ही इसको गुस्सा आने लगता है, यह दैत्य में बदलने लगता है। कह भी रहा था कि जब यह खाट से गिरा था तो उस समय गुस्से में था।
त्य बनने का बटन गुस्सा आने पर ी दबता है इसका। जरा झांक र देखूं क्या हाल है इब सिलबिल ा। कमरे में तो नजर नहीं आ रहा है। नहीं वह रहा।
अब तो यह नार्मल साइज का बन गया है। बल्कि लगता है कि थोड़ा-सा पहले से भी छोटा हो गया है। सोफे के कोने में मुंह लटकाये बैठा है जैसे कहीं से पिट कर आया है।
अब इसके पास जाना है लेकिन इसका ख्याल रहे कि इसको किसी तरह गुस्सा न आने पाये। अगर यह दोबारा दैत्य बन गया तो हमारी गर्दनें मरोड़ देगा।
हम कोई भी बात ऐसी नहीं करेंगे जिससे इसको गुस्सा आये। अपना गुस्सा कैम्पा कोला समझ कर पी जायेंगे।
ाई जी क्या हो गया मुझे? मेरा सारा रीर टूट रहा है। ऐसा लग रिया है से लम्बी मलेरिया की बीमारी से ठा हूं। मुंह का स्वाद खराब है।
तुझे गहरी नींद आ गई थी पगले, बस।
कमरे में चीजें उल्टी पड़ी हैं। थम दोनों मुझे सच्ची बात नहीं बता रहे हो और यह पंखा इस तरह टेढ़ा कैसे हो गया।
तुने अंगड़ाई ली प्यारे और यह पंखा तेरे हाथों से टकरा गया था और टेढ़ा-मेढ़ा हो गया। मकान मालिक ने छत कितनी नीची बनवा रखी है।
जब से यह पंखा टेढ़ा-मेढ़ा हुआ है कितना अच्छा लगता है। जैसे किसी महान कलाकार का बनाया अमर मार्डन आर्ट पीस हो।
ाजकल समझ में नहीं आया कि इन दोनों के व्यवहार में यह तिकारी परिवर्तन कैसे आया है। हर बात में मेरी तारीफ करते। कभी-कभी गुस्ताखी भी करता हूं तो झिड़कते नहीं हैं। पहले त-बात पर दोनों मुझ पर बगैर टिकट चढ़ जाया करते थे कहीं मेरे नाम लाटरी तो नहीं निकली है।
अब कल की ही बात लो। सुबह को चाय पर मैंने अपने कप पर मक्खी हटाई तो वह पिलपिल की चाय में जा गिरी उसने कुछ भी नहीं कहा, चुपचाप प्याला उठाकर चाय पीली और मेरे गले लिपट कर रोने लगा कि मैंने उसे चाय के असली स्वाद को पहली बार चखवाया। जरूर दाल में काला है। मैं देखना चाहता हूं कि यह किस हद तक सहन कर सकते हैं।



चूहे की पूछ कीलों वाले बूट के नीचे दबा कर खड़ा हो रहा हूं।
अई ऽऽऽऽऽ आह ! कितना मजा आ रहा है पूंछ दबने पर आऽऽऽजीब आनन्द आता है।
चूहा तो कब से कह रहा था कि मेरी पूंछ काट लो। मुझे यह अच्छी नहीं लगती। याड़ो तूने इसे दबा कर बड़ा अच्छा किया।
भाई जी मैं अपनी बीड़ी थमारी गंजी खोपड़ी पर रगड़ कर बुझा रहा हूं। थम नाराज तो नहीं हो।
न न न नहीं तो यह यह यह यह तो उल्टी अच्छी बात है
पिलपिल कब से कह रहा था कि सिर में दर्द रहता है गांव जाने पर सींगी लगवाने वाले से सींगी लगवायेगा। अब उसे गांव जाने की जरूरत नहीं रही। तेरी बीड़ी से ही इसका इलाज हो गया। याड़ी तूने डाक्टर का काम किया है। अब इसके सिर में कभी दर्द नहीं होगा।
भाई जी थमारे घुटनों में क्या है? हथौड़ा मार कर देख लूं। इनमें से बोंगो ड्रम की आवाज आती है या ढोलक की? ऐह आवाज तो बड़ी प्यारी आ रही है।
और हे-हे थमारी नाक में डण्डा डाल कर देखूं। अन्दर कीड़े-मकौड़े बैठे होंगे तो वह मर जायेंगे, या डर के मारे भाग जायेंगे। आजकल जमाना डण्डे का है। बगैर डंडा दिखाये कोई काम नहीं बनता। थमको तकलीफ तो नहीं हो रही?
अगर इससे थमारी नाक ठीक हो जाये। नजले की बीमारी खत्म हो जाये तो मैं इस तरीके को पेटेन्ट करवा लूंगा और लाखों कमाऊंगा।
नहींऽऽऽ। मेरी नाकबन्द रहती थी शायद इससे खुल जाये नजला भी नहीं होगा मुझे।
बात हद से बढ़ती जा रही है। हमें कुछ तो करना होगा। कब तक यह चलेगा? देखो तुम्हारी मूंछें टेढ़ी हो गयी हैं। मेरी पूंछ कट गयी, तुम्हारी नाक कालेका शिमला रेलवे लाइन की सुरंग बन गयी है।
आज रात को सोने के समय कुछ सोचना ही पड़ेगा।
भाईयों मेरी जिन्दगी तो तबाह हो गयी। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप दोनों की जिन्दगियां खराब न हों। थम परलोक सुधार लो। मोह-माया के जाल से निकलो। मोह, माया लालच की जड़ यह आंखें हैं। सूरदास जी ने इसीलिए अपनी आंखें फोड़ी थीं। मैंने थमारे खाने में नींद की गोलियां मिलाई थीं जब सो जाओगे तो मैं इससे थम दोनों की आंखें आज रात खोद निकालूंगा।

बाकी अगले अंक में......

जूली डिसूज़ा काम की तलाश में

शेष भाग -

''बेशक! जैसा की तुम कह रही हो, खतरा तो इसमें है ''महारानी ने कुछ सोचते हुए कहा'' हालाँकि तुम मुझे ऐसी नहीं लगीं जिसे खतरे की परवाह हो, मुझे भी नहीं है। यह न समझना कि मैं डरपोक हूं इसलिए तुमसे अपनी जगह लेने को कह रही हूँ। बात यह है कि मेरी रियासत के लिये यह निहायत ज़रूरी है कि मेरी शादी हो और कम से कम दो लड़के हों, उस के बाद मुझे क्या हो, कुछ फर्क नहीं पड़ता।''

''मैं समझी'' जूली बोली।

''और तुम राज़ी हो''?

''हाँ, मैं तैयार हूं'' जूली ने निश्चय पूर्वक कहा।

महारानी शीबा ने कई बार जोर से ताली बजाई और राजकुमारी पोपसी, तुरन्त आ गई!

''अन्ना, मैंने इसे सब कुछ बता दिया है, यह वही करेगी जो हम चाहते हैं और ये तीन हजार रुपये लेंगी दो हज़ार के बजाये। फ्योडोर को इस विषय में नोट करवा देना। यह वाकई मुझ जैसी है न? मेरे ख्याल से यह अधिक सुन्दर है''।

महारानी बाहर गई और दीवान सैंडर्स के साथ वापिस आई! ''हमने सब इन्तज़ाम कर लिया है फ्योडोर वास्कोविच! ''महारानी बोली। उसने झुक कर अभिवादन किया।

जूली को शक की निगाह से देखते हुए फियोडोर ने पूछा ''क्या यह अपना पार्ट अदा कर लेगी?''

''मैं तुम्हें दिखाती हूं'' लड़की अचानक बोली, ''महारानी जी, इजाजत है?'' उसने महारानी से कहा।

महारानी ने प्रसन्न हो सिर हिलाया!

जूली उठ खड़ी हुई।

''पर यह तो बहुत बढ़िया है अन्ना'' वह बोली, ''मेरा ख्याल नहीं था कि हमें इतनी सफलता मिलेगी, आओ साथ-साथ खड़े हो कर देखें?'' और जैसे महारानी ने किया था ठीक उसी तरह दूसरी लड़की को पकड़ कर शीशे के सामने ले गई।

''तुमने देखा, एक बढ़िया मैच''!

शब्द, तरीका, हावभाव, यह महारानी की बहुत ही बढ़िया नकल थी। महारानी ने सिर हिला कर सराहना की।

''यह अच्छा है कि इससे अधिक लोग धोखे में आ जायेंगे'' महारानी बोली!

''तुम बहुत होशियार हो'' महारानी ने सराहना की। ''मैं तो किसी दूसरे की जान बचाने को, इतनी बढ़िया नकल न कर पाती!''

बाकी बातों का फैसला अन्ना कर लेगी। ''अन्ना इसे मेरे बैडरूम में ले जाओ और मेरे कुछ कपड़े पहिना कर देखो।''

उसने एक नम्र विदाई ली और राजकुमारी पोपसी के साथ चली गई। ''हर हाइनेंस, यह कपड़े बाजार के उद्घाटन पर पहिनेंगी, बूढ़ी औरत ने एक काली और सफेद ड्रेस दिखाते हुए कहा। ''मेरा मतलब तीन दिन बाद, हो सकता है तुम्हें वहां उनकी जगह लेनी पड़े। हमें मालूम नहीं, अभी तक कोई खबर नहीं मिली है''।

अन्ना के कहने पर जूली ने अपने पुराने कपड़े उतार, ड्रेस को पहन कर देखा, वह उसे बहुत ही अच्छी फिट आई।'' अन्ना ने पास करते हुए सिर हिलाया।

''यहं तो तुम्हें बिलकुल ही फिट है केवल ज़रा सी लम्बी है क्योंकि तुम महारानी से एक इंच के करीब छोटी हो''।

''इसका तो आसानी से इलाज़ हो सकता है। महारानी छोटी एड़ी के जूते पहनती हैं मैंने ध्यान दिया था यदि मैं उसी प्रकार के कुछ ऊंची एड़ी के जूते पहन लूं तो सब ठीक हो जायेगा!''

राजकुमारी ने जूली को मगरमच्छ की खाल के वह जूते दिखाये जो वो आम तौर से पहनती हैं, जूली ने उन्हें ध्यान से देखा ताकि वह स्वयं उसी प्रकार के ऊंची एड़ी के जूते खरीद सकें।

''यह बिलकुल ठीक रहेगा'' अन्ना बोली!

अच्छा रहेगा अगर तुम महारानी से बिलकुल अलग किस्म की किसी चटख रंग की ड्रेस बनवा लो। ऐसा करने से एक क्षण के नोटिस पर बदलाव का पता न लग पायेगा।

जूली ने एक क्षण सोच कर पूछा, ''लाल रंग के खद्दर की ड्रेस कैसी रहेगी?'' अन्ना दोनों ही सुझावों से सहमत हो गई।

जूली पांच सौ रुपये के नोट पर्स में लिये, जरूरत के मुताबिक ड्रेस इत्यादि बनवाने की हिदायत के साथ बाहर आई। साथ ही उसे ब्लटज होटल में मिस मनरो आफ़ बोम्बे के नाम से कमरा ले कर ठहरने को भी कहा गया।

इसके दूसरे दिन दीवान उसे वहीं मिलने आया। ''अरे! आप तो बिलकुल बदल गईं'' दीवान ने झुक कर अभिवादन करते हुए कहा!

जूली ने भी उसका झुक कर अभिवादन किया। जूली अपनी नई आरामदेह जिन्दगी का पूरा आनन्द ले रही थी।

''तुम्हारे आने का मतलब शायद है कि मुझे अपना काम करने के लिये तैयार हो जाना चाहिये?'' जूली ने पूछा।

''हाँ, कुछ ऐसा ही है। अभी-अभी हमें खबर मिली है कि बाजार से वापिसी पर हर हाइनेंस के अपहरण का प्रयास किया जायेगा। बाजार का उद्घाटन चन्द्रभवन में है जो शहर से करीब दस मील दूर है पर बाजार का उद्घाटन महारानी स्वयं करेंगी क्योंकि इसका इन्तजाम करने वाली राजकुमारी नीला उनकी निजी मित्र हैं, और गहरी जान पहचान में तुम्हारा महारानी का स्थान लेना संभव न

होगा। मैंने जो प्लैन बनाया है बताता हूं ''

जूली ने ध्यान से दीवान सैंडर्स का प्लैन सुना! उसने दीवान से एक दो प्रश्न पूछे और अन्त में बताया कि वह पूरा प्लैन समझ गई है।

अगला दिन अत्यन्त सुहावना था बाजार के उद्घाटन, जिसका इन्तज़ाम राजकुमारी नीला ने रियासत के शरणार्थियों की सहायता के लिये किया था, के लिये बहुत ही उत्तम दिन।

वर्षा की सम्भावना होने के कारण बाज़ार का इन्तज़ाम चन्द्रभवन के बड़े-बड़े हॉलों में किया गया था। चन्द्रभवन पिछले सौ वर्षों से राजकुमारी नीला के परिवार वालों के ही पास था।

बहुत सी चीजें एकत्रित कर दान में दी गई थीं परन्तु इन सब में से रोचक आईडिया था वहां की बड़ी-बड़ी धनी १०० महिलाओं द्वारा अपने-अपने मोतियों के हार के एक एक बेशकिमती मोती का दान, जिन्हें अगले दिन एक-एक कर नीलाम किया जाना था। बागों में बहुत से अन्य आकर्षण तथा शो भी आयोज़ित किये गये थे।

जूली मिस मनरो के रोल में लाल रंग के खद्दर की ड्रेस, एक छोटा सुन्दर हैट तथा मगरमच्छ के चमड़े के ऊंची हील के सैंडल पहने, पहले ही वहां पहुंच गई थी।

महारानी शीबा एक समारोह के साथ वहां पहुंची, उनके साथ सुरक्षा के लिये दीवान साहब थे, उन्हें बड़े आदर से स्टेज पर ले जाया गया, जहां एक छोटे लड़के ने उन्हें गुलाब के फूलों का गुलदस्ता भेंट किया। महारानी ने वही काली सफेद ड्रेस पहन रखी थी जो जूली ने देखी थी, साथ छोटी एंड़ी के जूली जैसे ही मगरमच्छ की खाल के जूते पहने थीं। महारानी ने छोटा सा सुन्दर भाषण दे बाजार का उद्घाटन किया। महारानी ने एक छोटा सा काला हैट भी पहन रखा था जिससे लगी लेस उनके आधे चेहरे पर लटक रही थी। जूली अपने आप में हंसी।

महारानी शीबा हर स्टाल पर गई और कहीं-कहीं उन्होंने खरीदारी भी की, वे अत्यन्त मनोहर और आकर्षक लग रही थीं, कुछ ही देर बाद उन्होंने वापिस जाने की इच्छा प्रकट की।

जूली अपने पार्ट में होशियार थी उसने महारानी से एक क्षण मिलने की इजाजत मांगी। और राजकुमारी पोपर्सी से साथ चलने को कहा।

''आह! मिस मनरो, हां मुझे याद आया यह कोई अमरीकन जरनलिस्ट है, इन्होंने हमारे लिये बहुत कुछ किया है, मैं खुशी से इनके अखबार को इन्टरव्यू दूंगी। क्या कोई ऐसी जगह है, जहां हमारे काम में कोई बाधा न डाले ?''

एक छोटा सा पीछे का कमरा महारानी को तुरन्त दे दिया गया, दीवान सैंडर्स मिस मनरो को बुलाने गये और राजकुमारी पोपर्सी उनकी हाजरी में रहीं। जैसे ही दीवान साहब मिस मनरो को पहुंचा कर वापिस गये, जल्दी-जल्दी कपड़े अदल-बदल कर लिये गये।

तीन मिनट बाद दरवाजा खुला और महारानी फूलों का गुलदस्ता चेहरे के करीब किये बाहर निकलीं। बड़ी शालीनता से राजकुमारी नीला का फ्रेंच में अभिवादन कर वे प्रतीक्षा करती कार में जा बैठीं। राजकुमारी पोपर्सी उनके करीब बैठी और कार चल दी।

''अच्छा'' जूली बोली ''यह तो हुआ, पता नहीं मिस मनरो का क्या हाल होगा ?''

''उनका कोई ख्याल नहीं करेगा, वो आसानी से खिसक जायेंगी,''

''हां यह तो ठीक है, मेरा पार्ट कैसा रहा, मैंने ठीक ही किया ना? ''तुमने अपना पार्ट बहुत बढ़िया अदा किया।''

''दीवान साहब हमारे साथ क्यों नहीं आये ?''

''उन्हें ज़बरदस्ती रुकना पड़ा, किसी न किसी को हर हाईनेस की सुरक्षा का ध्यान भी तो रखना है।''

''अच्छा हो यदि कोई बम न फेंके! हम मेन सड़क से दूसरी ओर क्यों जा रहे हैं ?''

कार तेजी से एक बगल की सड़क पर बढ़ती जा रही थी जूली ने आगे को हो खिड़की से बाहर मुंह निकाल ड्राईवर को डांटा, पर ड्राईवर ने हंस कर कार को और तेज़ कर दिया।

जूली ने हंसते हुए कहा ''तुम्हारे गुप्तचर ठीक ही थे जितनी भी देर हम इसमें रह सकें उतना ही अच्छा है, हमें महारानी को निकलने का अधिक से अधिक समय देना चाहिये ताकि वो सुरक्षित शहर वापिस पहुंच जायें!''

खतरे के अन्देशे में जूली को आनन्द आ रहा था, बम्ब से जखमी होने का उसका कोई विचार न था पर ऐसी अनोखी घटना उसे रोमांचित कर रही थी।

अचानक बहुत तेज़ ब्रेक लगने से कार रुकी और एक आदमी हाथ में रिवाल्वर लिये कूद कर सामने आया।

''अपने हाथ ऊपर करो'' वह गुर्राया।

राजकुमारी ने जल्दी से हाथ ऊपर कर लिये पर जूली ने केवल उसे गुस्से से देखा और अपने हाथ नीचे ही रखे।

''इस बदतमीजी का क्या मतलब है, इससे पूछो'', उसने अपनी साथी से फ्रेंच में कहा।

वह आदमी किसी विदेशी भाषा में जोर-जोर से बोलने लगा।

उसकी कोई भी बात न समझ पाने के कारण जूली ने कंधे उचकाये और कुछ नहीं कहा। अब ड्राईवर भी आ कर उस आदमी के पास खड़ा हो गया।

''क्या महारानी साहिबा बाहर आने का कष्ट करेंगी'' वह बोला

फूलों को फिर से अपने चेहरे के करीब कर, जूली कार से उतरी, पीछे-पीछे राजकुमारी भी उतर गई।

''क्या महारानी साहिबा इधर को चलेंगी ?''

जूली ने आदमी के व्यंग की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और स्वयं ही करीब की टूटी-फूटी बिल्डिंग की ओर बढ़ गई। जिस सड़क से मोटर आई थी वह टूटी-फूटी थी और घर में कोई भी नहीं रहता था।

रिवाल्वर वाला आदमी अभी भी रिवाल्वर ताने इनके पीछे आ रहा था जैसे ही दोनों महिलायें सीढ़ियों से ऊपर चढ़ीं उसने आगे झपट कर बायीं ओर के एक कमरे का दरवाजा खोला। कमरा खाली था जिसमें दो कुर्सी और एक मेज़ ला कर रखी गई थी।

जूली भीतर जा कर बैठ गई, अन्ना मारटीलोवा भी जूली के पीछे आ कर बैठ गई। रिवाल्वर वाला आदमी कमरे से बाहर निकला और दरवाजा बन्द कर ताले की ताली घुमा दी।

जूली ने उठ कर खिड़की से बाहर देखा और बोली ''बाहर तो मैं कूद सकती हूं, पर मुझे ऐसा करना नहीं चाहिए, अभी तो हमें यहां ही रहना चाहिये। क्या ये लोग हमारे लिये कुछ भोजन लायेंगे ?''

लगभग आधे घंटे बाद उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिला। गरम-गरम सूप का एक प्याला दो सूखी डबलरोटी के टुकड़ों के साथ उसके सामने मेज़ पर लाकर रख दिया गया।

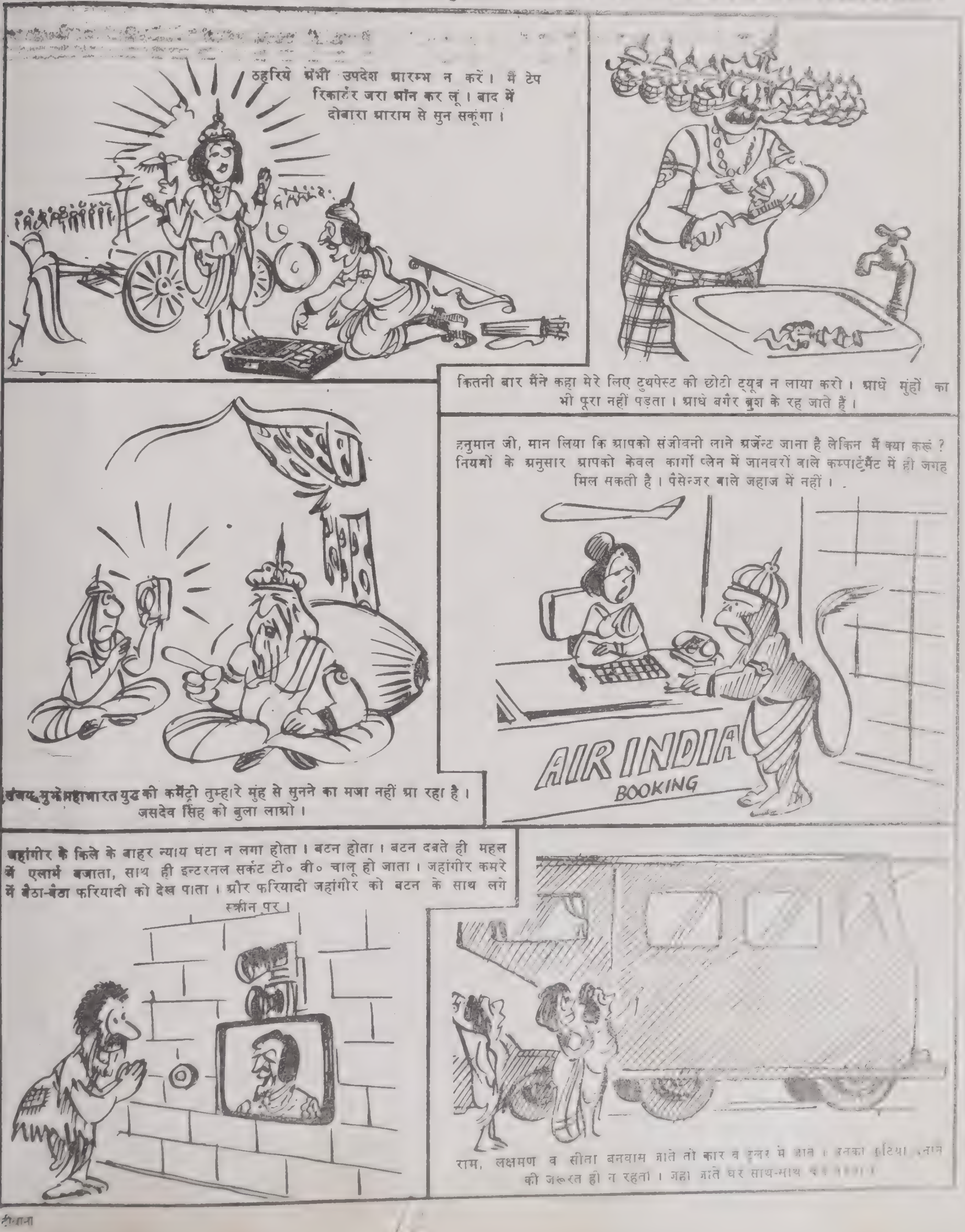
''जाहिर है यहां अमीरों के लिये कोई लबाज़ भात नहीं है'' जूली दरवाज़े में ताला लगते ही बोली। ''तुम शुरू करोगी या मैं करूं.'' राजकुमारी पोपर्सी ने भोजन के सवाल को एक तरफ कर दिया। ''क्या जाने महारानी किस हाल में होगी ?'' वह बोली, ''मैं कैसे खा सकती हूं।''

''वह तो बिलकुल ठीक है, मुझे तो अपनी फिक्र पड़ी है। बात यह है कि जब इन लोगों को

शेष पृष्ठ १६ पर

दीवाना संगम

कल्पना कीजिये कि घटनायें पुरातन काल की हों लेकिन आजकल की सुविधायें और उपकरणों को उनसे मिला दिया जाये तो क्या



पृष्ठ १४ से आगे

मालूम होगा कि इन्होंने महारानी के बजाये किसी और को पकड़ लिया है तो, वे कितने नाराज़ होंगे। वास्तव में जितनी देर भी हो सका मैं महारानी शीबा का नाटक करती रहूंगी और यदि मौका मिल गया तो भाग लूंगी''।

राजकुमारी पोपर्सी ने कुछ भी उत्तर न दिया। जूली ने सारा सूप पी लिया, उसका स्वाद कुछ अजीब था पर गर्म और खाने लायक था।

बाद में उसे कुछ नींद सी आने लगी, राजकुमारी पोपर्सी धीरे-धीरे रोती प्रतीत होती थी। जूली ने अपनी आराम कुर्सी पर अपने शरीर को ठीक किया और अपने सिर को एक ओर को लुढ़कने दिया।

वह सो गई।

जूली एकदम घबरा कर उठी, उसे लगा वह बहुत देर से सो रही है उसका सिर भारी था।

और फिर उसने कुछ देखा, जिसे देखते ही उसका दिमाग पूरी तरह से सजग हो गया।

वह लाल रंग के खद्दर की फ्रौक पहने थी। उसने उठ कर अपने चारों ओर निगाह डाली। वह अब भी खाली घर के खाली कमरे में थी, दो बातों के इलावा, सबकुछ बिलकुल वैसा ही था जैसा उसने सोते हुए छोड़ा था, पहली थी राजकुमारी पोपर्सी अपनी कुर्सी पर नहीं थी, दूसरी थी उस के अपने कपड़ों का बदल जाना।

''मैं यह सब सपना तो नहीं देख रही, क्योंकि सपना होने पर मुझे यहां नहीं होना चाहिये।''

उस ने खिड़की की ओर देखा और वहां भी उस ने दूसरी महत्वपूर्ण बात देखी. सोते वक्त सूरज का प्रकाश खिड़की के भीतर आ रहा था पर अब घर की छाया सूरज के प्रकाश से रोशन ड्राइव पर पड़ रही थी। घर का मुंह पश्चिम की ओर है जब मैं सोई थी तो दोपहर थी। इसका मतलब हुआ अब अगले दिन की सुबह है। फिर तो सूप में ज़रूर नशे की दवा होगी। इसका मतलब—ओह मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, सब पागलपन सा है''।

उसने उठ कर दरवाजे को देखा, दरवाजा खुला था, जूली बाहर निकल पूरे घर में घूमती फिरी, घर खाली और सुनसान था। जूली ने अपने हाथ से अपने दुखते सिर को पकड़ा और सोचने का प्रयास किया।

और फिर उसकी दृष्टि सदर दरवाजे के करीब पड़े एक फटे अखबार पर पड़ी। उसकी सुर्खी ने उसका ध्यान आकर्षित किया।

''अमरीकन डाकू लड़की शहर में'' उस ने पढ़ा ''चन्द्र भवन में बाज़ार के उदघाटन पर लालड्रेस पहने लड़की द्वारा सनसनी खेज डाका''।

जूली सम्भलते-सम्भलते धूप में आ गई सीढ़ियों पर बैठ उसने समाचार का शेष भाग पढ़ा, जो मुख्तसिर और साफ़ था।

महारानी शीबा के जाने के बाद तीन आदमी और एक लाल ड्रेस वाली लड़की ने रिवाल्वर निकाल जमा सब लोगों को घेर लिया। उन्होंने अमूल्य सौ मोती छीने और एक तेज रेसिंग कार में भाग गये। अभी तक उनका कुछ पता नहीं लग पाया है। उसी समाचार में बाद का समाचार था कि डाकू लड़की मिस मनरो आफ बाम्बे के नाम से ब्लिटज होटल में ठहरी हुई थी।

मैं तो मारी गई, पूरी तरह चक्कर में आ गई, पूरा समय मुझे मालूम था इस में कोई चक्कर ज़रूर है फिर भी।''

और ठीक इसी समय उसे एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी, एक आदमी का स्वर, जो थोड़ी-थोड़ी देर बाद कह रहा था।

''डैम'' फिर डैम! और फिर एक बार डैम! जूली को स्वर सुन खुशी हुई, उस स्वर में ठीक जूली की भावना प्रकट हो रही थी। वह भाग कर सीढ़ियों से नीचे गई। उनके कोने पर एक जवान आदमी पड़ा हुआ था। वह जमीन से अपना सिर उठाने की कोशिश कर रहा था। जूली को उसका चेहरा आज तक देखे हुए सब चेहरों से अधिक भला लगा, चेहरे पर छोटे-छोटे दाग थे और कुछ मजाकिया सा था।

''डैम! मेरा सिर'' नवयुवक बोला ''डैम इट'' मैं—'' वह चुप हो जूली की ओर देखने लगा

''मैं ज़रूर सपना देख रहा हूं'' वह धीरे से बोला

''वही मैंने भी सोचा था, पर हम सपना नहीं देख रहे'' जूली बोली ''तुम्हारे सिर को क्या हो गया ?''

''किसी ने मेरे सिर पर कुछ मार दिया था भाग्य से कोई मोटी चीज़ थी.''

उसने अपने को बैठने की अवस्था में कर, बुरा सा मुंह बनाया ''आशा है मेरा दिमाग कुछ देर में काम करने लगेगा, मैं अभी भी उसी पुरानी जगह हूं।

''तुम यहां कैसे पहुंचे ?'' जूली ने आश्चर्य से पूछा।

''वह तो एक लम्बी कहानी है, तुम महारानी तो नहीं हो, क्या नाम है उसका, क्या तुम वही हो ?''

''नहीं, मैं वह नहीं हूं, मैं तो सीधी सादी जूली डिसूज़ा हूं.''

''तुम सीधी सादी तो नहीं दिखती''नवयुवक ने प्रशंसाभरी निगाह से उसे देखते हुए कहा।

जूली का मुंह लाल हो गया।

''मुझे तुम्हारे लिये कुछ पानी वानी लाना चाहिये, ठीक है न ?'' जूली ने पूछा।

''हां, रिवाज़ तो कुछ ऐसा ही है, पर यदि तुम ढूंढ सको तो मेरे लिये व्हिस्की ले आओ'' नवयुवक बोला।

बन्द करो बकवास



जूली को व्हिस्की कहीं नहीं मिली और पानी का एक लम्बा घूंट पी नवयुवक ने अपने को पहले से बेहतर बताया।

''पहले मैं अपनी कहानी बताऊं या तुम बताओगी ? उसने पूछा

''तुम पहले बताओ''

''मेरी कहानी में विशेष कुछ नहीं है इत्तफाक से मेरा ध्यान महारानी की सैंडलों की ओर गया, जब वो कमरे के भीतर गई तो नीची एड़ी की सैंडल पहने थीं पर बाहर आते समय उनकी सैंडल ऊंची एड़ी की हो गई थीं। यह मुझे कुछ अजीब सा लगा। मुझे अजीब बातें अच्छी नहीं लगतीं।''

''मैंने अपनी मोटर साईकिल पर कार का पीछा किया और उन लोगों को तुम्हें मकान के भीतर ले जाते देखा। लगभग दस मिनट के बाद एक बड़ी रेसिंग कार तेज़ रफ्तार से आई, एक लाल ड्रेस वाली लड़की और तीन आदमी उतरे, उसकी सैंडल की एड़ी नीची थी, कुछ ही दे ··· नीची एड़ी वाली, काली सफेद ड्रेस पहने बाहर आई उसके साथ एक अधेड़ स्त्री और एक लम्बा दाढ़ी वाला आदमी था, वे पहली वाली गाड़ी में बैठ कर चले गये। दूसरे लोग रेसिंग कार में बैठ कर चले गये। मैंने सोचा वे लोग सब चले गये और अब मैं जा कर तुम्हारी मदद कर सकता हूं। जैसे ही मैं मकान के भीतर दाखिल हुआ किसी ने मेरे सिर पर पीछे से कुछ मारा। बस अब तुम्हारी बारी।

जूली ने अपनी कहानी बताई।

''और मेरी बड़ी अच्छी किस्मत थी कि तुमने कार का पीछा किया, वरना मैं तो एक बड़ी भारी मुसीबत में घिर जाती''।महारानी की कहानी तो बिलकुल साफ़ होती क्योंकि वे तो बाजार से डाका पड़ने से पहले ही जा चुकी थी और अपनी ही गाड़ी में रियासत पहुंची। क्या कोई भी मेरी गजब की अविश्वसनीय कहानी को सच मानता।''

''तुम्हारी जिन्दगी में तो नहीं'' नवयुवक ने सहमत हो कहा।वे दोनों अपनी-अपनी कहानी बताने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें आसपास का कुछ भी ध्यान न था। उन्होंने थोड़ी घबराहट के साथ एक लंबे उदास चेहरे वाले आदमी को दीवार से सहारा लिये खड़े देखा।

''बहुत ही रोचक'' उसने टिप्पणी की

''तुम कौन हो''?जूली ने पूछा।

उदास चेहरे वाले पुरुष की आंखों में अचानक एक चमक आई,''गुप्त विभाग का इन्सपेक्टर मोहन''उसने धीरे से कहा।मैंने तुम्हारी और इस नवयुवती की कहानी पूरे ध्यान से सुनी। हमें उसकी कहानी पर विश्वास करने में कुछ दिक्कत होती एक आधी बात की!''

''जैसे ?''

''जैसे, हमें आज पता चला है कि असली महारानी बम्बई में किसी शोफर के साथ भाग गई है''।

जूली ने लंबी सांस ली।

''और फिर हमने सुना था कि यह दूसरी लड़की किसी किस्म की बगावत के साथ थी। हम उन्हें जल्दी ही पकड़ लेंगे इसका मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं। एक मिनट के लिये क्षमा कीजिये ?''

वह भाग कर सीढ़ियों से ऊपर मकान में गया।

''अच्छा!''जूली ने कुछ अधिक जोर देते हुए कहा।'

''मेरे खयाल से सैंडलों पर ध्यान दे कर तुमने बड़ी ही चतुराई दिखाई'' वह अचानक बोली।

''बिलकुल नहीं,'' नवयुवक बोला, बात यह है कि मैं तो जूतों के व्यापार में ही बढ़ा हूं, मेरे पिता इस व्यापार के एक तरह के मालिक हैं वे चाहते थे मैं भी जूतों का व्यापार करूं और शादी कर जीवन आरम्भ करूं।पर मैं आर्टिस्ट बनना चाहता था'' और उसने लम्बी सांस ली।

''ओह! मुझे खेद है'' जूली ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा!

''मैं छः साल से कोशिश कर रहा हूं कुछ भी नहीं बना। चित्र कला मेरे बस का रोग नहीं है, सोचता हूं अच्छे बेटे की तरह घर वापिस चला जाऊं। वहां मेरे लिये बहुत काम है''।

''काम मिलना बड़ी बात है''जूली ने सहमत हो कहा।

''क्या तुम मेरे लिये जूते ट्राई करवाने का काम दिलवा सकोगे ?''

''मैं तुम्हें इससे बेहतर काम दे सकता हूं, यदि तुम लो तो''

''ओह, क्या ?''

''अभी चिन्ता न करो, मैं बाद में बताऊंगा। बात यह है कल तक मुझे ऐसी कोई लड़की ही नहीं मिली थी जिससे मैं शादी कर सकूं''

''कल ?''

''हां, बाजार में, और फिर मैंने देखा, बस वही एक है''।

और वह जूली को देर तक घूरता रहा।

''जिरेनियम कितने सुन्दर हैं'', जूली जल्दी से बोली, उस के गाल लाल हो गये थे।

''वह लुपिन है'' नवयुवक बोला।

''कुछ फर्क नहीं पड़ता'' जूली बोली

''बिलकुल भी नहीं, और जूली को उसने और नजदीक खींच लिया।

मदहोश

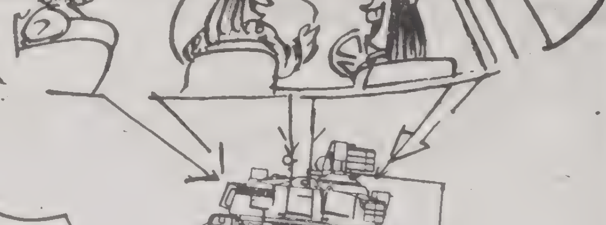


लेडीज़ टैंक

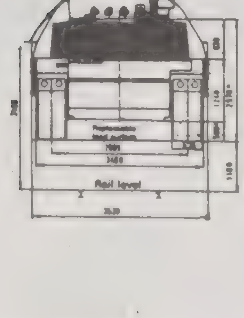
आज संसार में महिलायें हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं। यहां तक कि सशस्त्र सेनाओं के कई विभागों में इनकी भर्ती हो रही है। इसराइली सेना में तो इनकी काफी संख्या है और सशस्त्र मेकेनाइज्ड दस्तों में भी हैं। हमारे देश में भी निकट भविष्य में महिलाओं की भर्ती मेडिकल कोर या पैराशूट रेजिमेंटों के इलावा दूसरे सशस्त्र दस्तों में होने लगेगी। मान लीजिये टैंकों के पूरे के पूरे दस्ते महिलाओं द्वारा चलते हैं तो क्या होगा? महिलाओं की खास देन और भिन्न आवश्यकताओं को देखते हुए टैंकों व कैरियरों में मूल परिवर्तन करने पड़ेंगे जैसे—

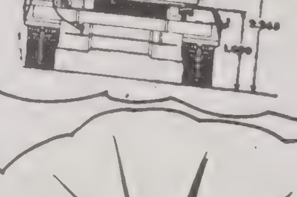


टैंक में एक इन्जेक्शन चेयर भी होगी। हवाई हमला शुरू होते ही चेयर सेनानी सहित ट्रैप डोर खोल ऊपर आ जाएगी और सेनानी हवाई जहाज को खूब खरी-खोटी सुनायेगी। जब तक जुबान से सात पुश्तों की मिट्टी पलीद न की जाये महिलाओं का युद्ध अधूरा ही रहेगा।

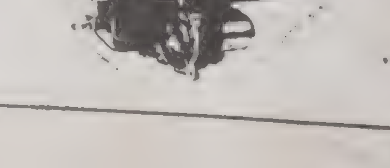


टैंक कपोला में सेनानियों के लिए अलग-अलग साउंड प्रूफ कम्पार्टमैंट हों। अगर कम्पार्टमैंट एक ही हो तो सेनानियां लड़ाई भूल आपस में गप्पें मारती रहेंगी।



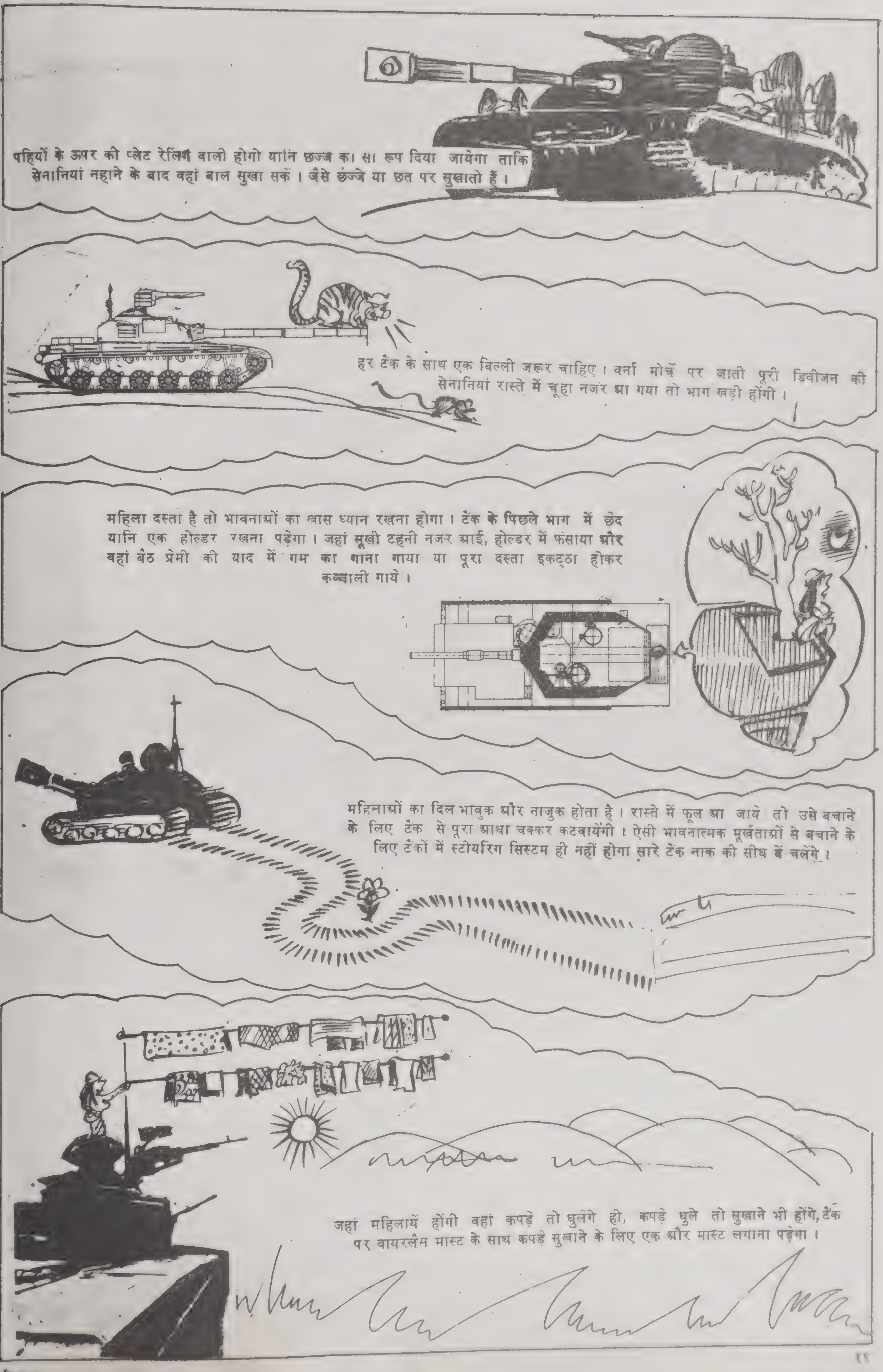


आरमर्ड कैरियर के साथ जर्कर डिवाइस लगा हो—

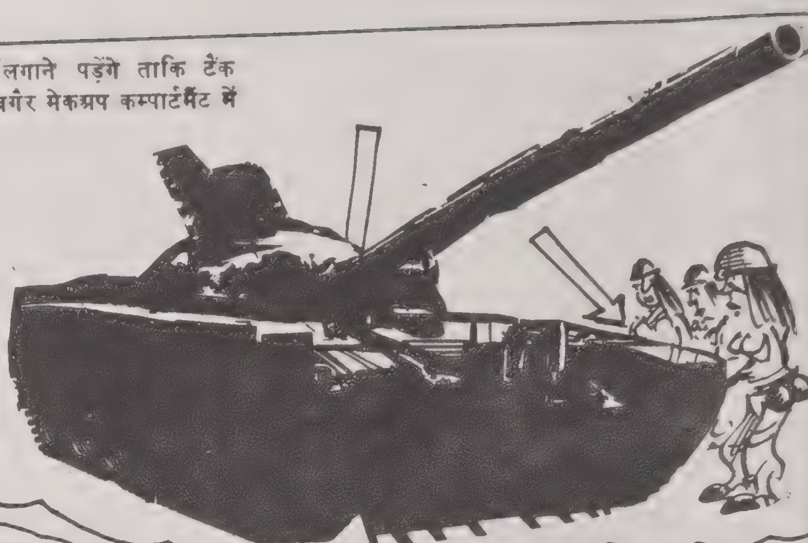


जर्कस डिवाइस

जर्कस डिवाइस कैरियर को जोर-जोर से हिलाता रहेगा। कैरियर में बैठी सेनानियों को ऐसा महसूस होगा जैसे मियादी बुखार चढ़ा हो—इसके कारण सेनानियां कैरियर में बैठ कर स्वैटर बुनने का इरादा नहीं कर पायेंगी। ऐसा नहीं होगा तो लड़ाई खत्म हो जायेगी और वह बैठी स्वैटर बुनती रहेंगी।

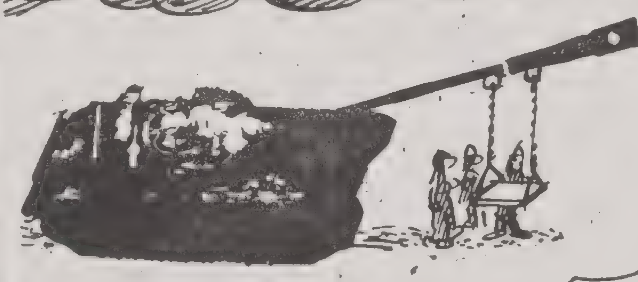

पहियों के ऊपर की प्लेट रेलिंग वाली होगी यानि छज्जे का सा रूप दिया जायेगा ताकि सेनानियां नहाने के बाद वहां बाल सुखा सकें । जैसे छंज्जे या छत पर सुखाती हैं ।
हर टैंक के साथ एक बिल्ली जरूर चाहिए । वर्ना मोर्चे पर जाती पूरी डिवीजन की सेनानियां रास्ते में चूहा नजर आ गया तो भाग खड़ी होंगी ।
महिला दस्ता है तो भावनाओं का खास ध्यान रखना होगा । टैंक के पिछले भाग में छेद यानि एक होल्डर रखना पड़ेगा । जहां सूखी टहनी नजर आई, होल्डर में फंसाया और वहां बैठ प्रेमी की याद में गम का गाना गाया या पूरा दस्ता इकट्ठा होकर कव्वाली गाये ।
महिलाओं का दिल भावुक और नाजुक होता है । रास्ते में फूल आ जाये तो उसे बचाने के लिए टैंक से पूरा आधा चक्कर कटवायेंगी । ऐसी भावनात्मक मूर्खताओं से बचाने के लिए टैंकों में स्टीयरिंग सिस्टम ही नहीं होगा सारे टैंक नाक की सीध में चलेंगे ।
जहां महिलायें होंगी वहां कपड़े तो धुलेंगे ही, कपड़े धुले तो सुखाने भी होंगे, टैंक पर वायरलैस मास्ट के साथ कपड़े सुखाने के लिए एक और मास्ट लगाना पड़ेगा ।

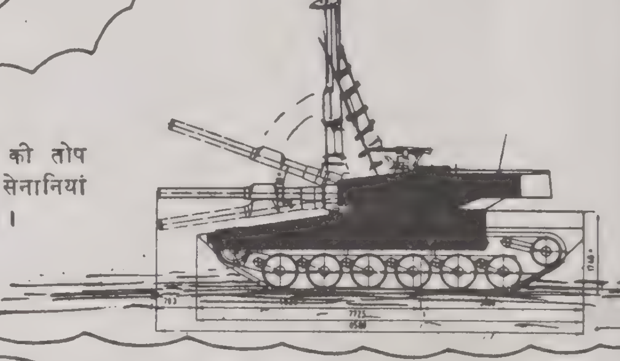
टैंकों में पहियों के ऊपर लगी स्टील प्लेटों के छोरों पर शोशे लगाने पड़ेंगे ताकि टैंक दस्ते की महिला सेनानियां युद्ध काल में इमरजेन्सी मेकअप बगैर मेकअप कम्पार्टमैंट में जाये कर सकें।



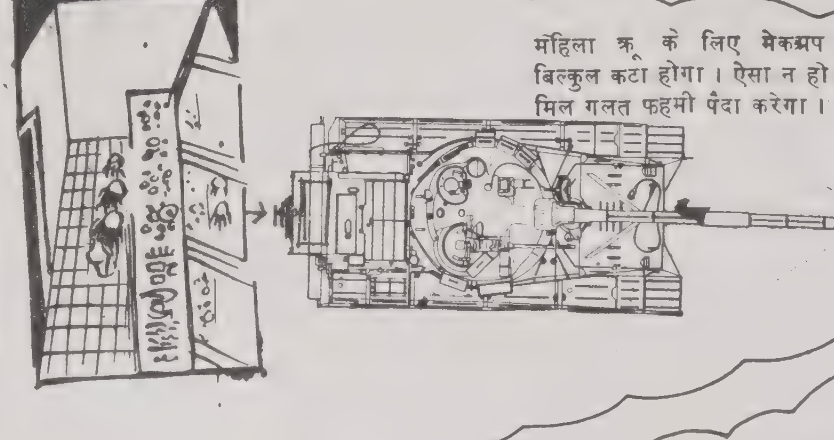


टैंक के तोप में कुंडे लगे हों जिनमें से झूला लगाया जा सके। बरसात में टैंक क्रू झूला लगाकर झूला झूलेगा। महिलाओं को झूला झूलने के जन्म सिद्ध अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

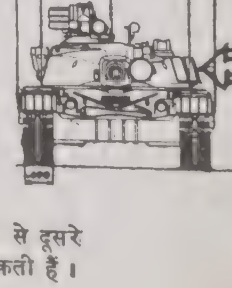


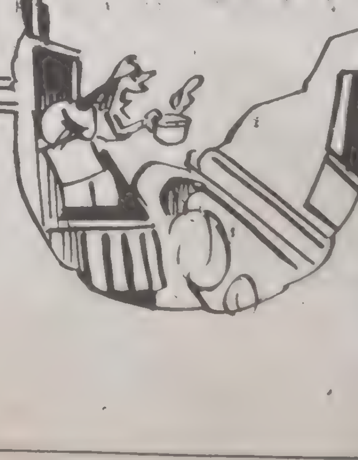


वर्तमान टैंकों की तोपें कुछ अंश तक ही ऊपर-नीचे घूम सकती हैं। महिला टैंक की तोप पूरे ९० अंश तक घूमने वाली हो यानि लम्ब रूप में खड़ी हो सकें। विवाहित सेनानियां उस पर चढ़ करवा चौथ और भैय्या दूज के चांद के दर्शन किया करेंगी।



महिला क्रू के लिए मेकअप चैम्बर टैंक के पिछले भाग में होगा जो दूसरे भाग में से बिल्कुल कटा होगा। ऐसा न हो तो मेकअप का साज-सामान गोला, बारूद के साथ मिल गलत फहमी पैदा करेगा। मशीनगन में कारतूसों की जगह लिपिस्टिक लोड की जा रही होगी।





टैंकों में एक ओर हैच है जो खिड़की रूप में दायीं या बायीं ओर खुले, इस हैच से दूसरे टैंक वालों से चीनी की कटोरी उधार मांगी जा सकती है या गप्पें मारी जा सकती हैं।

क्यों और कैसे

प्र० : संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान कहां है ?

उ. : संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान है 'सहारा रेगिस्तान' यह उत्तरी अफ्रीका में है। अरबी भाषा में 'सहारा' का अर्थ है 'बियाबान'। यह बियाबान अफ्रीका के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला है। ऐटलांटिक ओशन से 'रेडसी' तक पूर्व से पश्चिम तक यह 3000 मील लम्बा है। 'रेडसी' के पूर्व में रेगिस्तानी क्षेत्र साउदी अरेबिया से होकर 'परशिया' तक जाता है।

'सहारा रेगिस्तान' की चौड़ाई नापना इतना आसान नहीं है। रेगिस्तान कहीं भी किसी एक स्थान पर अचानक रुक नहीं जाता, जहां से हरियाली शुरू होती है। वरन् रेगिस्तान के हालात इतने धीरे-धीरे लुप्त होते हैं, कहीं भी उत्तर में इसकी हद का चिन्ह नहीं लगाया जा सकता, फिर भी 'सहारा' कहीं से भी 1000 मील से कम चौड़ा नहीं है जिससे इसका क्षेत्रफल 10 लाख मील अनुमान लगाया जा सकता है। 'सहारा' का इतना बड़ा क्षेत्रफल इसे लगभग अमरीका जिसमें अलास्का भी सम्मिलित हो, के बराबर बनाता है।

'सहारा' संसार का एक सबसे अधिक गर्म क्षेत्र है यहां साल में केवल 17 दिन बारिश होने की औसत है। परन्तु जब कभी भी वर्षा आती है तो केवल फूल और वनस्पति उग आती हैं, और जैसे एकदम दिखाई देतीं, वैसे ही अचानक गायब भी हो जाती हैं।

अधिकतर रेगिस्तान को लोग एक बहुत बड़ी समतल भूमि का क्षेत्र समझते हैं परन्तु सहारा में बहुत से पहाड़ हैं जिनमें से कोई-कोई 10,000 फीट की ऊंचाई तक के हैं। वर्षा के कुछ भाग में इन पहाड़ों की चोटियां बर्फ से भी ढक जाती हैं।

प्र० : पूर्ण ग्रहण पड़ने पर सूरज कहां चला जाता है ?

उ. : सूर्य ग्रहण तब होता है जब चन्द्रमा, सूरज और पृथ्वी के बीच से गुजरता है। इस प्रकार चन्द्रमा, सूरज के सामने उसे पूरा या फिर कोई हिस्सा नजर से छुपा देता है। पूर्ण ग्रहण तब होता है जब 'चन्द्रमा, सूरज की पश्चिम दिशा से चल कर पूरब की ओर अग्रसर होता है। जब सूरज पूरी तौर से छुप जाता है तो उसके चारों ओर का सुन्दर प्रकाश जिसे 'हालो' कहते हैं दृष्टिगोचर होता है, यह 'हालो' जली हुई गैसों का दायरा है जो सूरज की मुख्य बौड़ी को ढके रखता है। सूरज ग्रहण को नंगी आंख से देखना खतरनाक होता है क्योंकि सूरज की किरणों से आंखों को भारी नुकसान पहुंच सकता है।

क्योंकि चन्द्रमा पृथ्वी से बहुत ही छोटा है इस कारण चन्द्रमा, पूरी पृथ्वी सूरज से एक साथ नहीं ढक पाता, यही कारण है जब चन्द्रमा बीच से गुजर रहा होता है तो पृथ्वी के जिन-जिन भागों पर चन्द्रमा की परछाई पड़ती है वहां सूरज नहीं दिखाई देता और कहा जाता है उन स्थानों पर सूर्य ग्रहण दिखाई दे रहा है।

पृथ्वी पर किसी भी एक स्थान पर पूर्ण सूरज ग्रहण अधिक से अधिक साढ़े सात मिनट ही एक समय पर हो सकता है।

पिछला पूरा सूर्य ग्रहण 30 जून 1971 को हुआ था और अगला 11 जुलाई 1991 में दिखाई देगा।

प्र० : मोना लीसा कहां है ?

उ. : संसार का सबसे प्रसिद्ध रूप चित्र है जिसे लियोनारडाडा विसाई द्वारा 1503-1506 सन् के बीच बनाया था, यह चित्र आज भी परिस के 'लूवरे' की शोभा बढ़ा रहा है। 'लूवरे' जो पहले फ्रांस के राजाओं का महल था आज अमूल्य कला और पुरावशेषों का संग्राहालय है।

'मोना लीसा' को 'ला गियोकोन्डा' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इस चित्र का माडल लड़की का विवाहित नाम गियोकोन्डा था। 'मोना लीसा' 1516 सन् से आज तक फ्रांस में जब लियोनारडो इटली से आकर यहां बस गये थे। केवल दो बार ही यह चित्र फ्रांस से बाहर आया है।

एक बार सन् 1911 में इस चित्र को लूवरे से चुरा लिया गया था और दो वर्ष बाद इटली में मिला था। दूसरी बार यह चित्र 26 दिन के लिए फ्रांस से अत्यधिक सुरक्षा इन्तजाम के साथ अमरीका के प्रेसीडेंट श्री जान एफ कैनेडी के पास ले जाया गया था। इस समय चित्र का बड़ा भारी बीमा किया गया था।

लियोनारडो ने लीसा का चित्र बनाना आरम्भ किया तब वह 24 वर्ष की थी और वह स्वयं 51 वर्ष का था। लीसा इस महान चित्रकार के स्टूडियो में दोपहर बाद आया करती थी जब प्रकाश हल्का पड़ जाता था। चित्र बनाने के तीन वर्षों में लियोनारडो अपने माडल पर मोहित हो गया और शायद यही कारण था कि लीसा के पति फ्रांसिसको-डल-गियोकोन्डो को पूरा हुआ चित्र प्राप्त ही नहीं हुआ। चित्रकार हर बार बहाना बना देता था कि जहां भी जाता था उस चित्र को अपने साथ ले जाता था—मिलान, रोम और अन्त में फ्रांस, जहां किंग फ्रांसिस 1 ने चित्रकार को चित्र के बदले, छटाओ-डी-क्लोम्स नामक महल जो लोएर वैली में था देने का प्रस्ताव किया।

ऐसा विश्वास है कि फ्रांसिस 1 ने 4000 स्वर्ण क्राउन मोना लीसा के लिये दिये थे, परन्तु केवल लयोनोरड की मृत्यु के बाद ही किंग फ्रांसिस सुन्दर मुस्कान वाली मोना लीसा के चित्र को प्राप्त करने में समर्थ हुये।

इसके बाद यह चित्र फ्रांस के राजाओं, महाराजाओं के ही पास रहा। यह चित्र 'फोन्टेबलो' और 'टूईलरीज' जो वारसेल्स में हैं, में शोभायमान रहा। सन् 1800 में यही चित्र नेपोलियन बोनापार्ट के शयनकक्ष में भी टंगा रहा था।

खेल खेल में

इनसे मिलिए

सुनील गावस्कर एक नजर में

कमल भटनागर

नाम : सुनील मनोहर गावस्कर।

लोकप्रिय नाम : सनी।

जन्म तिथि : 10 जुलाई 1949।

जन्म स्थान : वैनेजुएला (दक्षिण अमेरिका)।

लम्बाई : 5 फुट 5 इंच।

आरम्भिक स्कूली शिक्षा : सैन्ट जेवियर स्कूल, बम्बई।

कालेज : सैन्ट जेवियर कालेज, बम्बई।

शिक्षा : बम्बई विश्वविद्यालय से बी. ए., इसके अलावा बिजनेस मैनेजमैंट में डिप्लोमा।

परिवार : पत्नी मार्शनील व बेटा रोहन जयविश्वा है, जिसका नाम रोहन कन्हाई, जयसिम्हा और विश्वनाथ के नामों पर आधारित है।

क्रिकेट खेलना कहां शुरू किया : अपने घर के अहाते में।

क्लब का नाम : राजस्थान स्पोर्टस क्लब एवं दादर लिनियम स्पोर्टिंग क्लब।

अन्य खेलों में रुचि : बैडमिन्टन, टेनिस एवं गोल्फ।

आरामदायक वेशभूषा : कुर्त्ता-लुंगी।

मजेदार भोजन : तली हुई पामफ्रेट की सब्जी (इसे केवल मेरी मां ही बना सकती है)।

कोई गुप्त इच्छा : मैं ओलम्पिक खेलों में तैराकी चैम्पियन बनना चाहता हूं (वैसे मुझे तैरना भी नहीं आता)।

आप पर सर्वाधिक प्रभाव किसका पड़ा है : अपने माता-पिता का।

क्रिकेट के सहारे देखा सबसे सुन्दर स्थान : आस्ट्रेलिया और वैस्टइंडीज।

स्मरणीय यात्रा : 1971 की वेस्टइंडीज व 1971-72 की आस्ट्रेलिया।

क्या प्रशंसकों के पत्र मिलते हैं : जी हां ! ढेरों।

इन्हें पढ़कर उत्तर देते हैं : हां, अधिकांश पत्रों का।

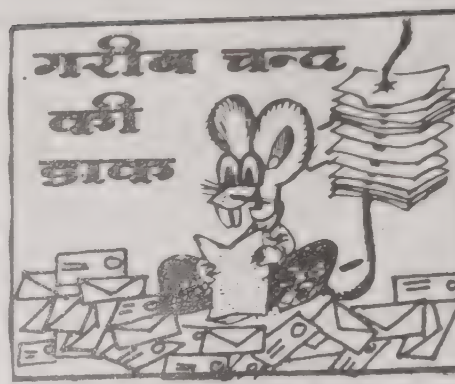
मनपसन्द मैदान : क्वीन्स पार्क ओवल, पोर्ट आफस्पेन, त्रिनिदाद

सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजी : 1971 में इंग्लैंड के विरुद्ध मानचेस्टर टेस्ट में 57 रन।

रोमांचकारी बल्लेबाजी : 1977 में इंग्लैंड के विरुद्ध ओवल टेस्ट की 221 रनों की पारी।

मनपसन्द खिलाड़ी : गैरी सोबर्स, रोहन कन्हाई एवं जयसिम्हा।

→



प्रेम बाबू शर्मा 'सुमन'—बगीची पोरजी : गरीब चन्द जी, कहते हैं जिन्दगी एक सुहाना सफर है तो इसके मोड़ों पर कठिनाईयां क्यों आती हैं ?

उ० : वही कठिनाई तो सफर को सुहाना बनाती है। कोई हसीना बगल में बैठी हो और जोर से मोड़ काट रहे हों तो वह गोद में आ गिरती है।

कमल कान्त साहू, बालोद (दुर्ग) : देश में अनाज की विकट समस्या है। फिर भी आप अब तक कैसे जिन्दा हैं ?

उ० : हमें राशन कार्ड लेकर लाइन में खड़ा नहीं रहना पड़ता। हमारे पास फ्री पास है।

प्रहलाद जसवानी—मन्डला : गरीब चन्द जी, क्या नेताओं पर भरोसा करना चाहिये ?

उ० : हां, अगर किसी को पागल कुत्ते ने काटा है तो।

चन्द्र प्रकाश शाह—कोटद्वार गढ़वाल : कहीं पर दो औरतें लड़ाई करनी हों तो उस समय आदमी को क्या करना चाहिए ?

उ० : और कुछ भी करें, अम्पायर नहीं बनना चाहिये।

रामदेव मुण्डा—बेरमो : गरीबचन्द जी, आप गरीब चन्द से दौलत चन्द कब बन रहे हैं ?

उ० : जब आप मुण्डा से गबरु जवान बनेंगे।

अशोक जौहर 'नगन'—देहरादून : लव मैरिज करने के लाभ व हानियां बतायें ?

उ० : लव मैरिज करने का एक लाभ यह है कि घोड़ी से गिरने का खतरा नहीं है।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : लोग अपनी प्रशंसा सुन कर खुश क्यों होते

हैं जबकि वास्तव में वो मूर्ख बन रहे होते हैं ?

उ० : मूर्ख बनने की खुशी में। कुछ तो बने। कोई यह नहीं कह सकेगा कि कुछ नहीं बन पाया।

मनोज आंचलिया—उदयपुर : डियर अंकल, चोर की जबान पर ताले कब पड़ जाते हैं ?

उ० : जब वह हैरीसन के घर चोरी करता हुआ पकड़ा जाता है।

एम. नागरतना राव—नई दिल्ली : आपने दीवाना में पहले दो कहानियाँ छापी थीं। 'तीन जासूस और चमकती आंख' और 'चांदी की मकड़ी' ये कहानियां काफी बड़ी थीं। आप छोटी कहानी क्यों नहीं छापते जो कि सब लोग, बच्चे आराम से पढ़ें।

उ० : यह पाठकों के सामने दाना डालने का हमारा फार्मूला है। ताकि पाठक अगले अंक खरीदने के लिये बंधुआ मजदूर बन जायें।

अरविन्द कुमार बाजपेयी—जबलपुर : गरीब चन्द जी, मैंने सुना है ? आप जमीन खोदने में बहुत होशियार हैं क्या यह बात सच है ?

उ० : अन्डर ग्राउंड होने वाले कई लीडरों का मैं स्पेशल एडवाइजर हूं। अपनी कलाओं को फैलाने के लिये एक ट्रेनिंग स्कूल खोलने का भी इरादा है।

अशोक जौहर 'सांवरिया'—देहरादून : यदि गधों के सम्मेलन में आपको नेता पद दे दिया जाए तो……?

उ० : आपका इरादा तो ठीक है। पहले अपने भाइयों का सम्मेलन बुलायें।

पति ट्रेडर्स—नेपालगंज : आजकल के जमाने में शिक्षक (Teacher) को इज्जत (मान्यता) क्यों नहीं मिलती ?

उ० : शिक्षक बेचारा केवल शिक्षा देता है। इज्जत, रिश्वत देने वाले को मिल रही है आजकल।

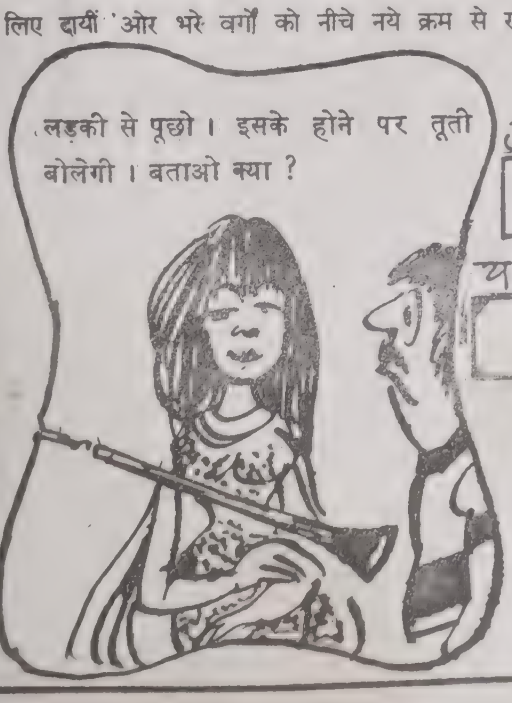
भयभीत करने वाला गेंदबाज	जो गेंद को स्विंग कराते हैं।
कोई निराशा	1974-75 में वेस्टइंडीज को न हरा पाना।
क्रिकेट में सबसे बड़ा रोमांच	वेस्टइंडीज के विरुद्ध 1971 की श्रृंखला के पोर्ट आफ स्पेन टेस्ट में विजयी रन बनाना (यह मेरा पहला टेस्ट था)।
क्रिकेट कब तक खेलनी है	35 वर्ष की आयु तक।
भविष्य की योजना	फिलहाल कोई नहीं।
और कोई इच्छा	ऐसी कम्पनी का चेयरमैन बनना, जिसकी कैपीटल 25 करोड़ रुपए हो।
घर का पता	121, महर्षि कर्वे रोड, चर्च गेट बम्बई-400020

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चित्र वर्ग पहेली

शब्द बनाइये— बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें। बायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए दायीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

१० रु. इनाम जीतिये



ा त व ज ण र ल

ज र व ब म न क ा ी

य र त व ि े

इ ल य व म ि ा ै

सही उत्तर —

अन्तिम तिथि
१५-१०-८२

नाम ------------
पता ------------

फिल्मों के टाइटल जानवरों पर खूब फबते हैं। कहीं-कहीं तो फिल्म की अपेक्षा जानवरों की सिचुएशनों पर ये ज्यादा फिट नजर आयेंगे। आप खुद ही देख लीजिये।

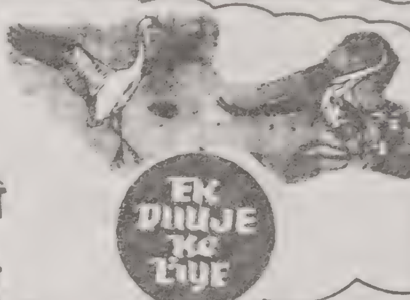
जानवरों पर फिल्मी टाइटलों का प्रयोग



बेगुनाह कैदी

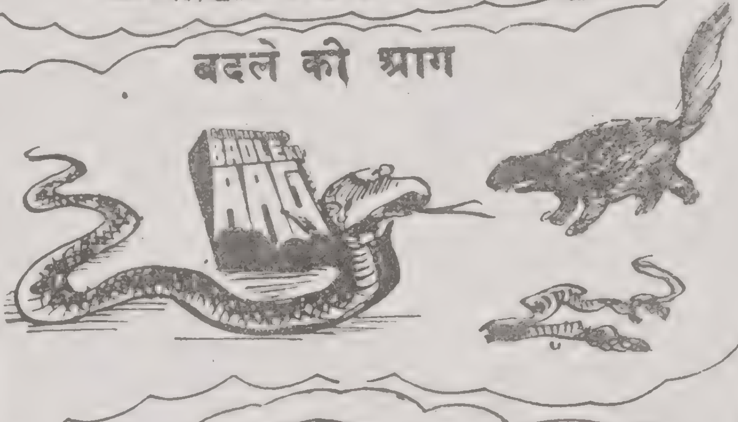


शाबाश डैडी



एक दूजे के लिए

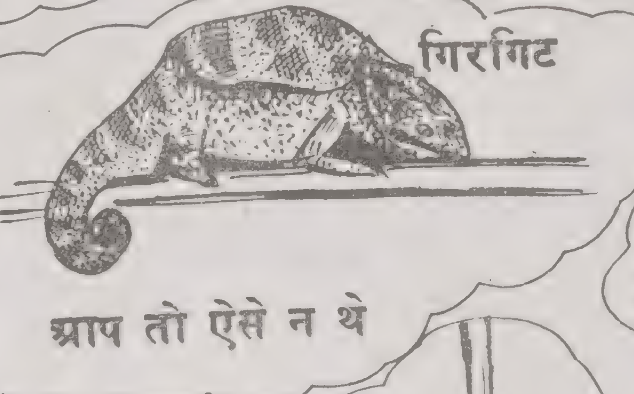
बदले की आग



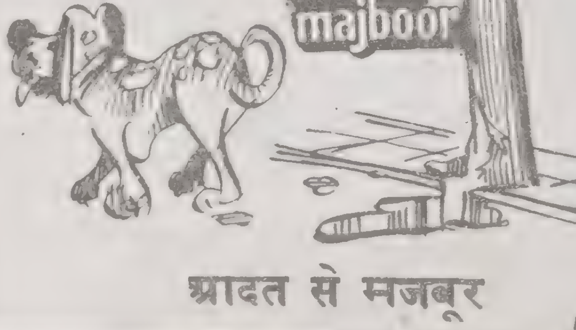
अंगूर



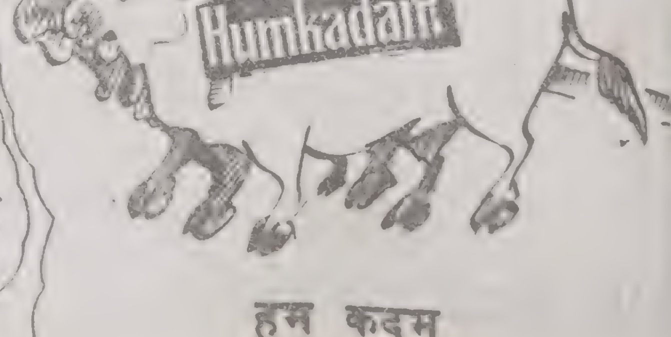
गिरगिट



आप तो ऐसे न थे



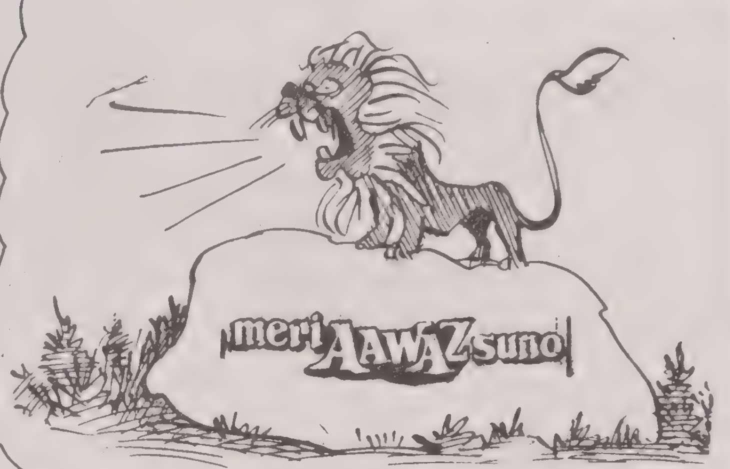
आदत से मजबूर



हम कदम



याराना



मेंरी आवाज सुनो



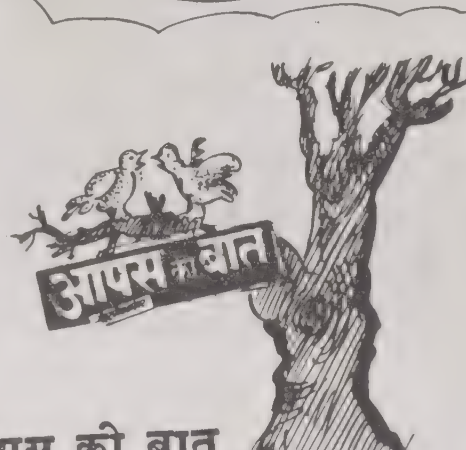
मिस्टर बू



नमक हलाल



शौकीन



आपस की बात



चोरी मेरा काम



इंसाफ का तराजू

'आने वाली फिल्म का ड्रामा —

सुराग



संजीव कुमार—प्रोफ़ेसर सक्सेना, शबाना आजमी—सुनीता, परिक्षित साहनी—डा. अजय, गीता सिद्धार्थ—गीता, मैक मोहन—सुरिन्द्र सूरी, सिद्धार्थ काक—पाल खन्ना, आशा सचदेव—रेणू, जयश्री टी—जयश्री।

साथ में राजेश खन्ना, टीना मुनीम, महमूद और शोभा खोटे।

संवाद---सागर सरहदी, गीत—कैफी आजमी।

संगीत—भप्पी लहरी, लेखक निर्माता और निर्देशक—जगमोहन मूंद्रा।

लास एनीजल्स के एक कैसौनी के मालिक पाल खन्ना के कैसोनी में पार्टी चल रही है। जिसमें उसके मित्र डा. अजय गुप्ता, प्रोफ़ेसर सक्सेना उनकी पत्नी गीता, सुरिन्द्र सूरी और उसकी गर्ल फ्रेंड दूसरे मेहमानों के साथ हंसी-मजाक कर रहे हैं। पाल—हमारे दोस्त अजय गुप्ता लड़की की तलाश में भारत जा रहे हैं। सक्सेना—और मुझे इस-लिए ले जा रहे हैं ताकि लड़की ढूंढ़ने में इन्हें कोई गलती न हो। लेकिन अजय शादी के लिए पेपरों में इश्तिहार देने वाली बात कुछ जमी नहीं। अजय—मैंने तो अकेले रहकर ही काफी जिन्दगी गुजार दी थी। बाकी भी गुजार देता। भाभी, तुम्हारे कहने पर यह शादी कर रहा हूं। सुरिन्द्र, सूरी, अजय और सक्सैना को अपना परिचय देता है। सक्सैना—नाम तो काफी सुना था। आज मुलाकात भी हो गई। (सूरी एक्सक्यूज मी कह कर चला जाता है) सक्सैना यह आदमी जुआ बहुत खेलता है। बिजनेस मैन कम जुआंरी ज्यादा है। अजय—यह खबरें तुम्हें कहां से मिलती हैं? सक्सैना अपनी पत्नी की ओर इशारा करके—जिसके घर में भौंपू

हो उसे खबरों की क्या जरूरत है। तभी भारतीय फिल्म स्टार जयश्री टी. वहां आती है। पाल जयश्री का परिचय मेहमानों से कराता है। जयश्री सक्सेना के साथ मिलकर गाती है।

गाना नं. 1 प्यार-प्यार-प्यार तू करे।

सुरिन्द्र, सूरी के पास एक बेटर आकर फोन का इशारा करता है। सूरी फोन सुनता है। और अपनी गर्ल फ्रेंड को लेकर वहां से निकलता है। सक्सेना उसका पीछा करता है। दो आदमी सूरी की कार रोकते हैं और उसकी पिटाई करते हैं। सक्सैना सूरी को बचाता है।

पाल के यहां पार्टी खत्म हो जाती है। अजय—वाह साहब क्या पार्टी दी है। आपका शुक्रिया कैसे अदा करूं। पाल—शुक्रिया किस बात का। वर्षों बाद आप हिन्दुस्तान जा रहे हैं वह भी शादी के लिए लड़की देखने। मेरी शुभ कामनायें आपके साथ हैं।

(सक्सैना और अजय बम्बई आते हैं) सक्सैना और अजय होटल में बैठे लड़कियों के फोटो देख रहे हैं। अजय—मेरी शादी हो रही है या निलामी? सक्सैना—बड़ी अच्छी किस्मत पाई है। एक जरा सा इश्तिहार दिया और लड़कियों की लाइन लग गई। लगता है हिन्दुस्तान में लड़कियों की शादी के अलावा कोई काम नहीं है।

सक्सैना और अजय महमूद की बेटी देखने आते हैं। सक्सैना—पढ़ी-लिखी कितना है? शोभा खोटे-मां का लैटर बंगलौर से आता है वह भी पढ़ लेती है। महमूद—बेटी इन्हें लड्डू खिलाओ। लड़की अजय से—भय्या आप लड्डू खाइए। महमूद—बेटी यह क्या कह रही हो? अजय—मैं चलता हूं। दोनों चले जाते हैं।

रेणू, सक्सैना और अजय से मिलने आती है लेकिन उसकी माडर्नेस देखकर अजय उसे रिजैक्ट कर देता है। रेणू चली जाती है। अजय—यह हिन्दुस्तानी लड़की है। सक्सैना—अभी तो शुरुआत है। आगे-आगे देखिए होता है क्या? अजय—तुम ही देखते रहो। मैं तो वापस जा रहा हूं। अजय काउंटर पर आता है। अजय बड़बड़ाता है। यहां की लड़कियां बड़ी बेहूदा हैं। रिसैप्शनिष्ट—जी··· अजय—कुछ नहीं मैं कमरे में जा रहा हूं। अगर कोई मिलने आये तो कह दीजिए मैं कमरे में नहीं हूं। रिसैप्शनिष्ट लड़की की ओर इशारा करके—डा. गुप्ता यह आपसे मिलने आई हैं। लड़की—मेरा नाम सुनीता है। लेकिन माफ कीजिए मैं चलती हूं। क्योंकि हिन्दुस्तानी लड़कियां बेहूदा हैं। अजय—माफ कीजिए। आप ठहरिए। चलिए काफी शाप में चलते हैं। सुनीता बुरा न मानो तो एक बात कहूं। मुझे इस माहौल में घुटन होती है। मुझे यह चमक-दमक रास नहीं आती।

दोनों बाहर घूम रहे हैं। अजय—हिन्दुस्तान आये हुये कई दिन हो गये हैं। आज पहली बार ऐसा लग रहा है कि मैं वहां आ गया हूं जहां से कुछ दूर मेरा घर हैं। अजय—तुम्हारे घर में और कौन है? सुनीता—जहां मैं काम करती हूं वहां मेरा बास है। अजय—मेरा मतलब भाई, बहिन, मां-बाप। सुनीता—शायद आपको मालूम नहीं यहां लड़की को लड़का देखने के लिए कोई भी मां, बाप, भाई, बहिन अकेले होटल नहीं भेजते। अजय—सौरी। मैं भूल गया था। धीरे-धीरे सब याद आ रहा है तुमसे मिलने के बाद। अमरीका में रहकर एक सपना देखा। एक भोली-भाली लड़की का। लगता है मेरा सपना साकार हो गया है। दोनों गाते हैं।

गाना नं. 2—तुम कहां हम कहां, देखो न मेरी जान।

सक्सैना और अजय आटो रिक्शा में आ रहे हैं। सक्सैना—तुम तो कहते थे यह हिन्दुस्तानी कलचर का भूत तुम्हारे सर से उतर चुका है। अजय एक बार उसे देख लो। सक्सैना—एक बात बताओ क्या वाकई वह बहुत खूबसूरत है। अजय—तुम खुद देख लेना। मैं लड़की की तलाश में था।

दोनों सुनीता के घर आते हैं। अजय, सुनील और सक्सैना का परिचय कराता है। सुनीता, सक्सैना के पैर छूती है। सुनीता—माफ कीजिये आपको जूते बाहर ही उतारने होंगे। अन्दर भगवान की मूर्ति है। आप बैठिए मैं खाना लगाती हूं। सक्सैना अजय से—यह क्या ड्रामा है पैर छूती है जूते बाहर उतरवाती है। अजय—यह ड्रामा नहीं यहां की सभ्यता है रिवाज है। सक्सैना—कुछ भी कहो तुम बोलने लगे हो। सक्सैना अपनी ओर से सुनीता को अंगूठी भेंट करता है।

अजय और सुनीता रजिस्टार के आफिस में शादी कर लेते हैं। सक्सेना—अजय आखिरकार तुम्हारी शादी हो ही गई। सुनीता, सक्सैना के पैर छूती है। सक्सैना—तुम जब भी पैर छूती हो लगता है मैं बूढ़ा हो गया हूं। तुम बहुत खुश किस्मत हो। मेरा दोस्त है न हीरा है। भगवान तुम दोनों की दुनिया भर की खुशियां दे।

सक्सैना और अजय वापस जा रहे हैं। सुनीता एयरपोर्ट आती है। अजय—तुम इसी टैक्सी से वापस चली जाना। (सुनीता रोती है) अजय—कुछ दिन की बात है। पासपोर्ट विजा तैयार होते ही बुलवा लूंगा। सक्सेना—अगर फ्लाईट मिस करनी है तो मुझे बता दो। अजय—कबाब में हड्डी नहीं बनते। सक्सेना—अच्छा सुनीता मैं चलता हूं। सुनीता···रोते हुए···पहुंचते ही खत लिखना।

(अजय की फ्लाईट चली जाती है)।

अजय, सुनीता को लास एन्जिलस का टिकट भेजता है।

सुनीता प्लेन में आकर बैठती है और अपना मेकअप बाक्स कैरियर पर रख देती है। एक लड़की सुनीता की बराबर वाली सीट पर आकर बैठती है। और वह भी अपना मेकअप बाक्स सुनीता के मैकअप बाक्स के बराबर में रखती है। सुनीता की आंख लग जाती है। बराबर वाली लड़की सुनीता का बाक्स उठाकर बाथरूम में जाती है। और अपनी साड़ी की फाल में से कोकीन के पैकेट निकाल कर सुनीता के बैग में रख देती है और वापस आकर

बैग को वहीं रख देती है जहां से उठाया था। प्लेन न्यूयार्क में लैन्च करता है। लड़की एयरपोर्ट से बाहर आकर सुरिन्द्र सूरी को फोन करती है। लड़की···हैलो मिस्टर सूरी मैंने उस लड़की के मेकअप बाक्स में पैकेट रख दिया है। वह अब यहां से लास एन्जिलस आ रही है। सूरी—थैंक यू।

सुनीता अपना कस्टम कराती है। कस्टम आफिसर को जब यह पता चलता है कि सुनीता डा. अजय की पत्नी है और पहली बार स्टेट्स आई है तो वह अटैची वगैरा चैक करके उसे जाने देता है। सुनीता, अजय को लास एन्जिलस फोन करती है। अजय—हैलो सुनीता। सफर कैसा रहा? सुनीता—मैं तो बहुत घबरा रही थी। लेकिन कोई परेशानी नहीं हुई। कस्टम भी आराम से हो गया। अब मुझे तुम्हारे पास पहुंचने में कितना वक्त लगेगा। अजय—पांच घण्टे। सुनीता—अच्छा चलती हूं। फ्लाईट का वक्त हो गया है।

अजय, सुनीता के आने का समाचार प्रो. सक्सैना को देता है। सुरिन्द्र, सूरी, अजय को फोन करता है। सूरी—हैलो डा. कैसे हो। अजय—मैं पहचाना नहीं। सूरी—भूल गये हम पाल की पार्टी में मिले। आज शाम को घर आ जाओ। मेरी पत्नी आज शाम को हिन्दुस्तान से आ रही है। आई. एम. सौरी।

डा. अजय, प्रोफेसर सक्सेना और उसकी पत्नी गीता, सुनीता को रिसीव करने एयर पोर्ट पर आते हैं। प्लेन लैंन्ड होता है लेकिन सुनीता उस फ्लाईट से नहीं आती। अजय परेशान हो जाता है तभी अजय के लिए फोन अटैन्ड करने की एलाऊंसमेंट होती है। अजय फोन सुनता है जहां उसे मैसेज मिलता है कि उसके लिए काऊंटर पर मैसेज है वह ले लें। अजय घबराया हुआ काऊंटर पर आता हैं। जहां उसे पर्चा मिलता है। जिसमें लिखा है 'तुम्हारी बीवी हमारे कब्जे में है। घर जाओ और फोन का इन्तजार करो। सक्सेना—क्या हुआ? अजय उसे वह चिट्ठी देता है।'

अजय, सक्सेना और गीता घर आते हैं। फोन की घण्टी बजती है। एक आदमी। इंगलिश में फोन पर बातें करता है। हैलो डाक्टर गुप्ता। अजय—हां बोल रहा हूं। आवाज—दो लाख डालर लेकर सेंट फ्रांसिज के गोल्डन गेट ब्रिज पर आ जाओ। लेकिन अकेले आना। अपहरणकर्ता सुनीता को फोन देता है। सुनीता· रोते हुये—अजय मुझे बचाओ यह लोग मुझे मार डालेंगे। फोन कट जाता है। सक्सेना पैसा मांग रहे थे। अजय—दो लाख डालर लेकर सेंट फ्रांसिज के गोल्डन गेट ब्रिज पर बुलाया है अकेले। सक्सेना—जाना तो पड़ेगा लेकिन अकेले नहीं जाओगे। अजय अपहरणकर्त्ता की बताई हुई जगह पर आता है। सक्सेना एक कौने में छुपा खड़ा है। ट्रैफिक पुलिस का एक सिपाही अजय के पास आता है। और उसका ड्राईविंग लाईसन्स देखता है। तभी अपहरणकर्त्ता का एक आदमी वहां आता है और अजय के साथ पुलिस वाले को देखकर वापस चला जाता है। सक्सेना पुलिस वाले के जाने के बाद अजय के पास आता है। सक्सेना—वह आदमी तो पुलिस वाले को देखकर चला गया। चलो लास एन्जिलस चलते हैं मुझे यकीन है वह दोबारा फोन करेगा।

सक्सेना और अजय घर जाते हैं। फोन की घण्टी बजती है। अजय फोन सुनता है। सक्सेना ने टेप रिकार्ड लगा रखा है। अपहरणकर्त्ता अजय से इंगलिश में बात करता है और उसे वार्निंग देता है कि अगर इस बार पुलिस लाये तो सुनीता को खत्म कर दिया जायेगा। सक्सेना टेप आन करता है। तो उसे एक लफ्ज पर बड़ा झटका लगता है। क्योंकि जिस प्रकार वह लफ्ज बोला गया था ऐसा कोई नानइंग्रेज ही बोलता है। सक्सेना का शक सुरिन्द्र सूरी पर जाता है।

अगले दिन सक्सेना और अजय अपहरणकर्त्ता की बताई हुई जगह पर आते हैं। एक आदमी अजय के पास आता है। आदमी अजय के पास आकर—सुनीता। अजय—सुनीता कहां है? डा. गुप्ता अगर सुनीता की जिन्दगी चाहते हो तो यह बैग मुझे दे दो। सक्सेना दूर से उस आदमी का फोटो लेता है। आदमी बैग लेकर चला जाता है? अजय—इसका पीछा करें। सक्सेना—इसकी जरूरत नहीं है। अपना काम हो गया है।

सक्सेना फोटो लेकर सी. बी. आई. आफिस आता है और केस उनके हवाले कर देता है।

सक्सेना, अजय और गीता बैठे हैं। अजय—अब हम सिवाये इन्तजार के कुछ नहीं कर सकते। सक्सेना—हम तुम्हारी परेशानी समझते हैं। हम दोनों तुम्हारे साथ हैं। अजय—तुम दोनों तो मेरे साथ हो वह तो अकेली है। पता नहीं क्या गुजर रही होगी? सक्सेना—मैं सुनीता को ढूंढकर रहूंगा।

सक्सेना अपनी बीवी गीता के जिद्द करने पर हिन्दी पिक्चर देखने आता है। फिल्म में राजेश खन्ना और टीना मुनीम गा रहे हैं।

गाना नं. 3—वह नजर लेके रही अल्लाह तू।

सक्सेना और गीता यह देखकर चौंक जाते हैं कि एक्स्ट्रा लड़कियों में सुनीता बैठी हुई है। सक्सेना थियेटर से बाहर जाता है।

मध्यान्तर

सक्सेना प्रोजेक्शन रूम में आता है। सक्सेना आपरेटर से-इस फिलम में इन्टरवल से पहले जो गाना है उसका एक छोटा-सा टुकड़ा लेना चाहता हूं। आपरेटर—यह तो हो नहीं सकता। सक्सेना आपरेटर को रुपये देते हुये—हो सकता है। आपरेटर फिल्म में से सक्सेना के बताने पर सुनीता के दो-तीन फ्रेम काट कर दे देता है।

सक्सेना, अजय और गीता घर में बातें कर रहे हैं। सक्सेना—सोच भी नहीं सकते थे वह भोली-भाली मासूम-सी लड़की मामूली-सी एक्स्ट्रा होगी। उसने

शेष पृष्ठ ३१ पर


फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर
झुंड के पास आने की इन्तजार में हम दो दिन से बैठे हैं।
मैं गोली नहीं चला रहा था उत्सुकता में चल गई।
शिकार चोर
अब देखो हाथी दांत, एक मील दूर अभी भी आगे भागा जा रहा है।
क्या हम उनका पीछा नहीं कर सकते ?
बेशक—छुप कर, एक ट्रक और दो हैलीकोप्टरों के साथ।
उनके वापिस आने तक यहीं प्रतीक्षा करनी होगी।
FALK & BARRY 9-24
फैन्टम बाम्बासी को — शिकार चोर बड़े मैदानों में
ठीक! संदेश भेजा जा रहा है।
बन्दूकों के साथ .... फैन्टम बाम्बासी को
FALK & BARRY 9-25
फैन्टम बाम्बासी को ...शिकार चोर बड़े मैदानों में, बन्दूकों के साथ।
बोलते ढोल ... पहाड़ी और खाईयों के पार ...
!
!
संदेश पहुंच जाता है
फैन्टम बाम्बासी को ...शिकार चोर बड़े मैदानों में
FALK & BARRY 9-26
!
!
फैन्टम बाम्बासी को ...शिकार चोर बड़े मैदानों में ... बन्दूकों के साथ ...
'मो' वो ढोल क्या है ?
ओह कोई बेकार सी शादी या लड़ाई होगी ...
देखो! झुंड वापिस आ रहा है! हाथी दांत!
!!
मुझे वहां हत्या आरम्भ होने से पहले पहुंचना होगा।



बड़े मैदान में जैसे हाथियों का झुंड घनी घास की ओर जाता है।
यह देखो, वे आ रहे हैं जब तक मैं न कहूं गोली न चलाना समझे 'होंन
समझ गये 'जी'।
डेविल वह रहे शिकार चोर!
FALK & BARRY 9-30
© 1980 King Features Syndicate, Inc World rights reserved
यह आ गये 'जो' हम कितनों को मारें
जल्दी जल्दी गोली चलाओ, हम सब चार-चार को मार लेंगे, बाकी बाद में, बहुत ढेर हाथी दांत हैं।
मैं तो उनकी नेता बड़ी हथनी को मारूंगा।
उस के बिना झुंड में घबराहट फैल जायेगी।
'जो' तुम यह सब कैसे जानते हो?
चुप! जैसे वह कहता है वैसे ही करो! और क्या करना है 'जो'?
सिर चट्टान के जैसा है, निशाना आंख में लगाना, जैसे ही तुम उन्हें क्रास में देखो, गोली चला दो . . .
पास आने तक रुके रहो!
FALK & BARRY 10-1
रुको, पास जाने दो, फिर मैं पांच गिनूंगा।
एक, दो, तीन . . . चार . . . . . .।
मैं निशाने पर हूं।
ठांय ठांय
ठांय
?
?
?
क्रमशः

पृष्ठ २८ से आगे

किसी के साथ मिल कर यह चाल चली हैं। अजय—हो सकता है उसकी कोई मजबूरी रही होगी। अजय—उसे यह सब करने की क्या जरूरत थी? मेरा सब कुछ तो उसी का है। उसने भले ही नाटक किया हो लेकिन मैंने तो उससे प्यार किया है। एक बार मिल जाये तो पूछूंगा उसने ऐसा क्यों किया। सक्सेना—मिलेगी तो जरूर। गीता—कहीं ऐसा तो नहीं कि सीता और गीता फिल्म की तरह यह भी जुड़वां बहिनें हों। सक्सेना—शटअप। गीता खामोश हो जाती है।

रात में सक्सेना बिस्तर पर आकर लेटता है तो गीता उससे बात नहीं करती। सक्सेना—क्या बात है नाराज हो गई। गीता—मुझसे बात मत करो। सबके सामने मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दीं। सक्सेना—अजय कोई बाहर का आदमी थोड़े ही है।

गीता—तुम्हारे लिये नहीं होगा। सक्सेना—अच्छा बाबा माफ कर दो। सक्सेना गीता को मनाने के लिये गाता है।

गाना नं० 4—क्या हुआ रे क्या हुआ।

सूरी अपनी गर्ल फ्रैंड के साथ एक होटल के सुईमिंग पूल में नहा रहा है। दो आदमी वहां आते हैं और उसे मारते हैं। तभी सक्सेना वहां आता है और सूरी को बचाता है। सक्सेना—तुमने मार खाने का ठेका ले रखा है। यह चाहते क्या हैं? सूरी—मैं जुए में हार गया था। इनका कर्जा देना है। सक्सेना—सुनीता कहां है? सूरी—पता नहीं। उसके मेकअप बाक्स में मैंने अपने गैंग की लड़की द्वारा कोकीन छुपवा दी थी। ताकि उसे लेकर मैं अपना कर्जा चुका सकूं। लेकिन वह यहां आने से पहले गायब हो गई। (दोनों आदमी इनकी बातें सुन लेते हैं।)

सक्सेना सी. बी. आई. आफिस आता है तो उसे पता चलता है कि जो आदमी पैसों का बैग लेकर गया था वह पाल खन्ना के होटल में प्राय: देखा जाता है।

पाल खन्ना अपने अड्डे पर आता है। सुनीता वहां बैठी है। सुनीता—अब क्या चाहते हो? क्यों कैद कर रखा है मुझे? पाल—किसके पास जाना है, कौन है यहां तुम्हारा? नाम तो बता दो। सुनीता—जिसकी अमानत हूं। पाल—तुम्हें यकीन है कि वह आकर तुम्हें ले जायेगा। अगर उसे पता लग गया कि उसकी पत्नी ने उसे धोखा दिया है। तुम बेला से सुनीता बनी थीं। बम्बई की फिल्मों में एक एक्स्ट्रा थीं। सुनीता—मैंने जो किया तुम्हारे कहने पर किया। जाने दो मुझे। पाल—हम दोनों गुनाह के बन्धनों में बंध गये हैं। यह रिश्ता ही कुछ ऐसा है जो टूट नहीं सकता। अब तुम्हें जीना होगा मेरे साथ। सुनीता—दो पैसे मदद करके फायदा उठाना चाहते हो। पाल उसके थप्पड़ मारता है। सुनीता रोती है। यहां से बाहर कदम रखा तो मार डालूंगा।

अजय और सक्सेना बात कर रहे हैं। अजय तुम्हारा मतलब है पाल खन्ना। सक्सेना—हां-हां पाल खन्ना। तुम्हें शादी के इश्तिहार की सलाह किसने दी थी? अजय—उसी ने दी थी। सक्सेना—फिल्म इन्डस्ट्री से किसका सम्बन्ध था? अजय—वह कह रहा था कि किसी स्टूडियो के कैंटिन का मैनेजर है। मैंने उसे बुलाया है उसे यह नहीं मालूम होना चाहिए हमें असलियत मालूम हो चुकी है। अब एक्टिंग हम करेंगे। पाल आता है। पाल—कहिए मुझे कैसे याद किया। काफी परेशान नजर आ रहे हो? सक्सेना जो बात मैं बताने जा रहा हूं वह हम तीनों के बीच रहनी चाहिए। डा० अजय की पत्नी को किडनैप कर लिया गया है। अजय—न्यूयार्क से उसका फोन आया था। लेकिन लास एन्जिलस पहुंचने से पहले वह किडनैप हो गई। पाल—तुम्हें किस पर शक है। सक्सेना—सूरी पर। फोन की घण्टी बजती है। अजय—हां हैलो सुनीता, बोलो-बोलो। फोन कट जाता है। पाल—किसका फोन था? अजय—सुनीता का। ऐसा लग रहा था वह छुप कर फोन कर रही हो। और फिर कोई बीच में आ गया। उसने काट दिया। सक्सेना मुझे लगता है कि वह अब दोबारा भी फोन करेगी। पाल—मैं सूरी का पता लगाता हूं आप फोन का इन्तजार कीजिए। पाल चला जाता है। पाल एक पब्लिक बूथ से किसी को फोन करता है। सक्सेना अपने एक फ्रेंड द्वारा एक्सचेंज से उस जगह का पता ले लेता है जहां पाल ने फोन किया था।

सक्सेना और अजय बाहर जा रहे हैं। सक्सेना, गीता से—जिस जगह हम जा रहे हैं यह वहां का नम्बर और टेलीफोन है। अगर हम शाम तक न पहुंचे तो पुलिस को बता देना।

अजय और सक्सेना, पाल के अड्डे पर पहुंच जाते हैं। सुनीता उन्हें मिल जाती है। तभी एक आदमी सुनीता को गन प्वाईट पर लेकर बाहर आता है और सुनीता को गाड़ी में लेकर भाग जाता है। अजय और सक्सेना कार से उसका पीछा करते हैं। सुनीता की कार दुर्घटना ग्रस्त हो जाती है। अजय और सक्सेना, सुनीता को लेकर अस्पताल आते हैं।

सुनीता की तबियत सुधरने लगती है। और वह होश में आ जाती है। अजय वहां से जाने लगता है। सक्सेना—कहां जा रहे हो? अजय—मरीज की जिन्दगी बच गई। अब मेरा यहां क्या काम? सक्सेना, सुनीता से—सुन रही हो। तुमने ऐसा क्यों किया। सुनीता—क्या जवाब दूं? आपको यकीन आयेगा। यह मेरी मजबूरी थी या मेरी कमजोरी या हार। मैं एक गरीब बाप की बेटी थी। मेरे पिता स्टूडियो में मिस्त्री थे। मैं लडकी जात जब स्टूडियो आती तो वहां के लोग तरह-तरह की फब्तियां कसते। हमारी जिन्दगी का मकसद सिर्फ रोटी और चाय रह गया था। पाल स्टूडियो में कैन्टिन चलाता था। और हमारी मदद करता रहता। लेकिन मुझे या बाबा को यह पता नहीं था कि वह हमारी क्यों मदद कर रहा है। पाल अमरीका से भी बाबा की दवाई का खर्च भेजता रहा। जब अमरीका से वापस आया तो मुझसे मिलने आया। (फ्लैश बैक शुरू होता है) पाल सुनीता

से—काम कैसा चल रहा है ? सुनीता—एकस्ट्रा के रोल कर रही हूं। पाल—तुम्हारी मुसीबतों के दिन खत्म हो गये अब तुम्हें एक बड़ा रोल मिल रहा है लेकिन हकीकी जिन्दगी में। मैं अमरीका में एक लखपति डाक्टर को जानता हूं जो हिन्दुस्तानी लड़की से शादी करना चाहता है। तुम्हें उससे शादी करनी होगी। सुनीता—मैं उससे झूठी शादी कैसे कर सकती हूं। पाल—तुम शादी नहीं कर रही हो। तुम्हें तो एक्टिंग करनी है। सुनीता—यह धोखा है। मैं किसी को धोखा नहीं दे सकती। पाल—होश की दवा करो। तुम जिस घर में रहती हो वह मेरा है। अपने बाप के लिए जो दवाईयां खरीदती हो वह मेरे पैसे से आती हैं। अगर मैं चाहूं तो निकालकर बाहर फेंक सकता हूं। (फ्लैश बैक खत्म होता है)।

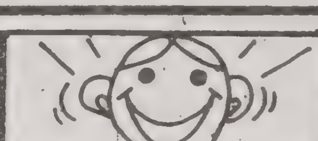
सक्सेना पाल को फोन करता है। सक्सेना—हाईवे पर सुनीता का एक्सीडेंट हो गया है। जो आदमी उसे लेकर जा रहा था वह मर गया है। सुनीता बहुत सीरयस है। डाक्टर अजय और दूसरे डाक्टर उसे बचाने की कोशिश कर रहे हैं। आपको सोनी का कुछ पता चला ? पाल—अभी नहीं। मैं जनरल हास्पिटल के आई. सी. यू. में हूं। अगर पता लगे तो मुझे फोन कर देना।

पाल फूल लेकर सुनीता को देखने आता है। सुनीता आंख बन्द किये पड़ी है उसके आक्सीजन लगी है। पाल सक्सेना से। अब कैसी तबीयत है ? सक्सेना—अभी भी बहुत सीरयस है। रात को कुछ होश आया था तो बस बड़बड़ाती रही। अजय तुमसे कुछ कहना है। पाल-प्रोफेसर साहब आप बहुत थके हुये लगते हैं। आप आराम कर लें। सक्सेना—मैं सोच ही रहा था। मैं अपनी बीवी का इन्तजार कर रहा हूं। पाल--आप आराम कीजिये मैं यहां हूं। सक्सेना चला जाता है।

पाल--तुम मुझ से बचकर भागना चाहती थीं न बेला, जाओ मैं तुम्हें आजाद करता हूं। अब यह राज रहेगा। पाल आक्सीजन की नली निकाल देता है। सुनीता मरने का नाटक करती है। तभी सक्सेना, अजय, पुलिस आफिसर और गीता वहां पहुंचते हैं। सुनीता आंखें खोलती है। सक्सेना-पाल साहब तुम्हारा नाटक खत्म हो गया। यह डिटेक्टिव थामसन। थामसन--चलिए मिस्टर पाल। पाल चला जाता है।

सुनीता, अजय से—मैं जानती हूं मैं तुम्हारी दोषी हूं। लेकिन इस नाटक के दौरान मुझे तुमसे प्यार हो गया था। हो सके तो मुझे माफ कर देना। सक्सैना, गीता को लेकर वहां से चला जाता है। अजय—तुम मेरी पत्नी हो यह रिश्ते इतनी आसानी से नहीं टूटते। अजय, सुनीता को गले लगा लेता है।

हंसना मना है



एक नौजवान सर्जन अपनी पत्नी के साथ सैर को जा रहे थे। उन्हें एक सुनहरी बालों वाली जवान सुन्दरी ने अत्यन्त प्रेम से पुकारा।

'उस व्यक्ति को आप 'कहां' मिले थे' पत्नी ने पूछा।

'ओह वह तो ऐसे ही एक नवयुवती है जिसे मैं धन्धे के सिलसिले में मिला था।'

'अच्छा,' पत्नी धीरे से बोली' 'अपने या उसके ?'

दो छोटे-छोटे लड़के रेल के डिब्बे में बहुत शोर मचा कर खेल रहे थे। तंग आकर गार्ड ने उनके पिता से कहा यदि उनके बच्चे ठीक से नहीं बैठ, तो वह उनके लिये मुसीबत कर देगा।

पिता ने परेशान होकर उत्तर दिया, 'मुसीबत—तुम्हें नहीं मालूम मुसीबत क्या होती है। मेरी पत्नी हस्पताल में है। मुझे दस्त लगे हैं। मेरी बेटी के अभी तीन बच्चे एक साथ पैदा हुए हैं। एक लड़के को उंगली में अभी-अभी चोट लगी है और दूसरे ने हमारे टिकट चबा डाले हैं।

नवयुवती श्रीमती पंडित अपने पति के लिए नाश्ता बिस्तर पर ही ले आई, "प्रिये तुम कमाल की हो' पति ने प्रसन्न होकर कहा, 'तुम तो संसार का आठवां चमत्कार हो।'

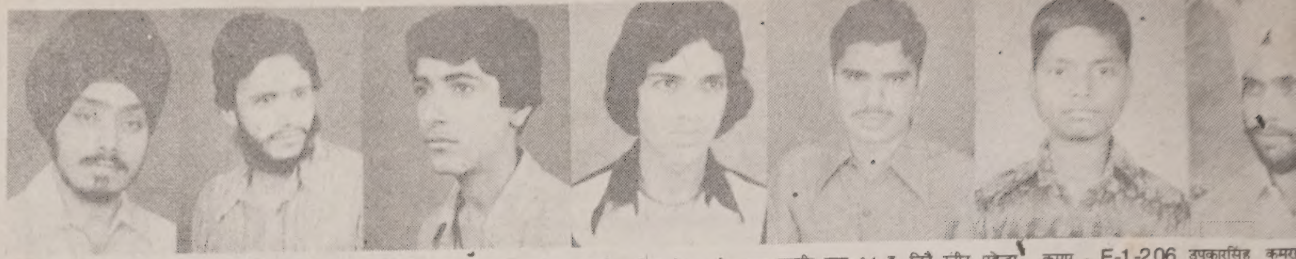
'शायद, वह बोली, 'परन्तु ध्यान रखना मैं तुम्हें बाकी के सातों के साथ गुलछर्रे उड़ाते न पकड़ लूं।'

होटल में बैठा एक बदमाश, एक सुन्दर जवान लड़की को देख सतर्क हो गया। जब सुन्दरी उसके करीब से गुजरी तो अपनी बुलाने वाली 'वाओ' की केवल एक सरसरी दृष्टि ही पड़ी देख, वो बोला, 'क्षमा कीजिए, मैं समझा था आप मेरी मां हैं।'

'हो ही नहीं सकता', सुन्दरी ने उत्तर दिया, 'मैं विवाहित हूं।'

एक बार जब मैं ड्राईविंग टेस्ट परीक्षक के रूप में काम कर रहा था तो एक युवती को चौराहे पर कार चलाने में एक ऐसी भूल करते देखा, जिससे सारा ट्रैफिक जाम हो गया। परीक्षक ने अपनी कार में बैठे हुए सोचा यहां उसे कोई नहीं पहिचानता और कार की खिड़की से मुंह बाहर कर बोला 'हे मेमसाहब ! आपको लाईसेन्स किसने दे दिया ?'

युवती ने चिल्लाने वाले की ओर देखा, तुरन्त उसका चेहरा चमक उठा। अब पीछे नहीं हटा जा सकता था उसने युवती का चेहरा देखते ही पहिचान लिया, एक सप्ताह पहले ही उसने ड्राइवर ट्रेनी उस युवती का चालक लाईसेन्स के लिये रोड टेस्ट लिया था और युवती ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया 'तुमने !'



पी. एस. सचदेव, १३, पटेल मार्केट करनाल, २० वर्ष, रेडियो पर फ़रमाईश भेजना, पत्र मित्रता।

राजेश भारती, शर्मा कुंज, २ शिव पुरी, बुलन्दशहर, २६ वर्ष, पत्र-मित्रता।

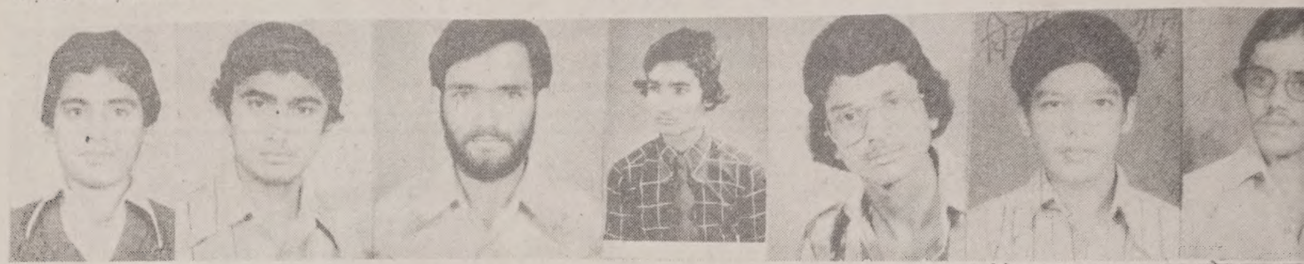
देवेन्द्र कुमार, १७१४ पुष्पविहार सेक्टर-३, नई दिल्ली-१७, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता।

तुलसी मोटवानी उर्फ पप्पू ४४२/२४ भाग बावड़ी अजमेर, (राज), १८ वर्ष, फोटोग्राफी करना, पत्र-मित्रता।

शाकीर मुसा, १८ इ. चितै स्ट्रीट डाजी मुसा रोड मदुरई, २० वर्ष पत्र-मित्रता।

महेन्द्र कुमार, E-1-206 हैदराबाद (आ. प्र.), १६ साल रंनीग, गेमस।

उपकारसिंह कमरा इन्द्र नैशनल, ६६० मुक्तसर, २४ वर्ष,



सुरेन्द्र कुमार, BIV6 97 वेट गंज, लुधियाना, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना व पत्र-मित्रता।

श्री चंद माधवानी द्वारा श्रीचंद क्लाथ स्टोर, घंटाघर के पास, मोरी गेट के सामने, १२ वर्ष।

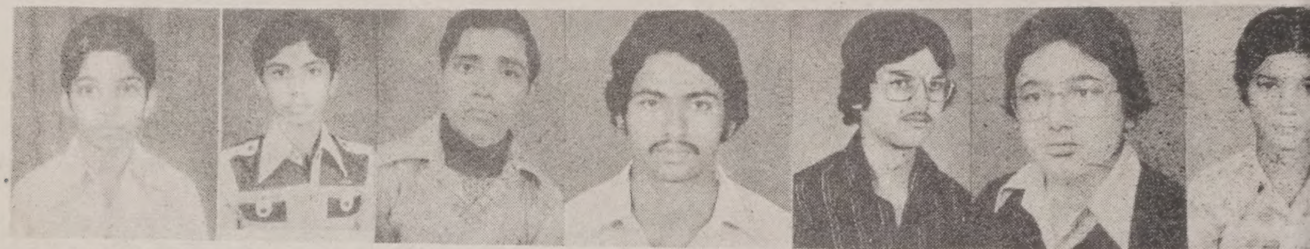
सोम प्रकाश शर्मा, ७३, विष्णु नगर, जगाधरी वर्कशाप, २३ साल, क्रिकेट खेलना, पढ़ना।

नरेश ठक्कर, पत्रकार २वी, प्रताप नगर, चितौड़गढ़ (राज.), १९ वर्ष, लेखन व पत्र-मित्रता।

अबर्दुरहमान खा, यूनीवर्सल टेडर्स सुभाष बाजार, टोंक, १७ वर्ष, जुडो कराटे खेलना व पत्र-मित्रता।

विवेक प्रकाश गुप्ता, ३५/१ चन्द्र शेखर आजाद मार्ग, झांसी, १५ वर्ष, नित्य कबाडखाने जाना

राजेन्द्र कुमार नाह बाजार जबलपुर, खेलना, बागवानी



वस्तुपाल पीतलिया, ११९ चांदनी चौक, रतलाम (म.प्र.), १६ वर्ष, टिकट संग्रह व पत्र-मित्रता।

हरेश हंसराज ठ., सुमन एस. एन. रोड, बंबई १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना।

सुरेन्द्र कुमार, पूनम वैरागी स्टोर पत्थर वालान, मेरठ शहर।

जासफ पी. एस. मन्नडियर लैन, उमालयस् केरल, २२, पत्र-मित्रता संगीत सुनना और क्रिकेट खेलना।

शर्मा मु० कुरैचानाका, मऊरानीपुर (झांसी), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता तथा अभिनय करना।

वीरेन्द्र कुमार सिंगल, नानु मल नरेश कुमार, कैमिस्ट एण्ड ड्रैगिस्ट लाडवा, (१३२१३२), १७ वर्ष।

राजेश कुमार पुरो १६२; सुभाष ३११००१। राजस



मेहमूद गज़नवी, ग्राम नगरी, जिला मन्दसौर (म.प्र.), १७ वर्ष, ऐसा कोई शौक नहीं जिसका गुलाम हूं।

अनिल कुमार गुप्ता, प्रकाश ग्राई-न्डग इन्ड्रस्ट्रीज उड़ीसा २० वर्ष, पत्रमित्रता किताबें पढ़ना, घूमना।

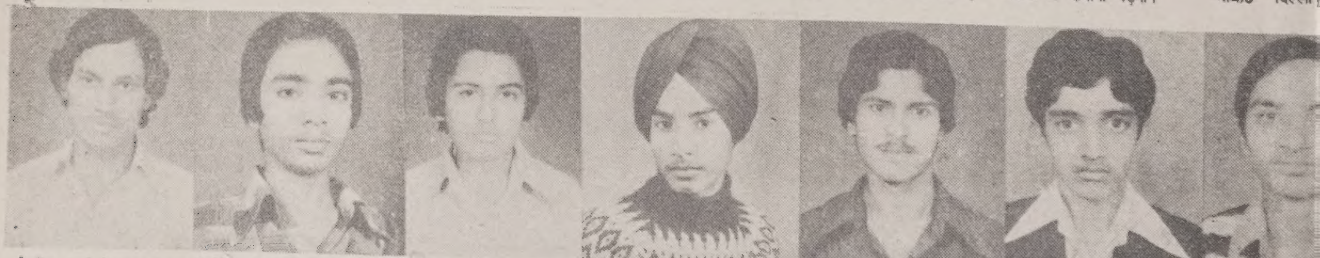
विजय कुमार द्वारा जसना लाल-बुकसेलर, अजमेर, १९ वर्ष, दीवाना, फिल्में।

अनूप कुमार गप्ता, मोती भवन, के. जी. आर. पथ, पो. कंचरापाड्डा, जि. 24 प्रगना।

एम० ज० अक्मूल, सूफिया कुटीर, दोधपुर, अलीगढ़-२०२०००१; १९ वर्ष, पत्र मित्रता, टिकट संग्रह।

सुधीर पाण्डेय, ३० जगतपुरा मन्दसौर (म.प्र.) १० वर्ष, चित्र बनाना व दीवाना पढ़ना।

मुकेश कुमार जै अबुल फजल मार्केट दिल्ली,



ईब्राहिम अली, नेशनल ट्रंक मार्ट २७६ अब्दुल रहमान स्ट्रीट, बंबई-३, २७ वर्ष, पत्र-मित्रता

संतोष कुमार गुप्ता, सदर बाजार, कोतवाली, पहाड़ गंज, १६ वर्ष दीवाना पढ़ना तथा जुडो कराटे।

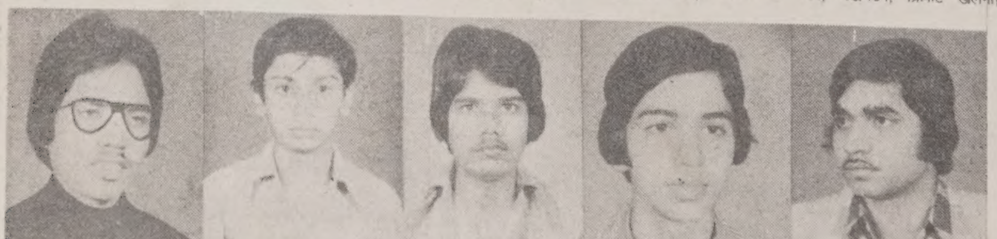
पुरुषोत्तम काशीराम सोसायटी उल्लासपुर १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना एवं दीवाना पढ़ना।

गुरमीत सिंह जब्बल, फाईन वुड एण्ड इंजीनिरिंग वर्कस, सुतहरी रोड, होशियारपुर, २० वर्ष।

सैयद सरवत अली, ४६१ मलुकपुर, बेरली (U.P.), १८ वर्ष, बैडमिंटन, क्रिकेट खेलना।

प्रमोद कुमार क्याल, स्टाफ क्वाटर नं ए-२६ बिरलापुर, २४ परगना, ७४३३१८ (पंजाब), १७ वर्ष,

ऋषभ कुमार जैन, मोहल्ला, शाहदरा वर्ष, दीवाना पढ़



प्रदीप कुमार गावड़े २१, नन्दलाल पग, मेनरोड इन्दौर (म.प्र.), १८

कमल गुप्त द्वारा श्रीकृष्ण गुप्त एण्ड सन्स, वैस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ-१, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता

रमेश कुमार जैन, अमर मिल (डिमापुर नागालैंड), १८ वर्ष, पढ़ाई करना, खेलना

तीवान दास निर्मल, म.नं. ३६२०, दराबा पान, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-, २६ वर्ष, पत्र-मित्रता।

अरविंद गुप्ता द्वारा श्री कैलाश चंद्र गोस्वामी, विवेकानन्द स्कूल के पीछे, छावनी कोटा-(राज.)

'मुसीबत—तुम्हें नहीं क्या होती है। मे

फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखन न भूलें

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ——————————

पता ——————————

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता



आप अपने देश के लिये क्या कर रहे हैं?

अगर कुछ भी नहीं कर रहे हैं तो हमसे मत शर्माइये। हम भी कुछ नहीं कर रहे हैं।

32000 ppo

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82

